सितम्बर-२०२६ ◆ वर्ष १६ ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक
सितम्बर-२०२६

सुला मौत की नींद दिया
लाखों लोगों को,
उसका बदला आज लिया है
मार वायली को
नहीं तुम्हारा अपराधी,
नहीं शोक है मुझको
इसी काज के लिए प्रभु,
फिर भारत भेजें मुझको।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹१५ १७६

24 Carat
महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा॰) लि॰
महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा॰) लि॰
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच
KITCHEN KING
CHUNKY CHAT MASALA
CHANA MASALA
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
GARAM MASALA
गरम मसाला
SHAHI PANEER MASALA
शाही पनीर मसाला
PEACOCK
KASOORI METHI
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1500
आजीवन	- 2500 रु.	$ 400
पंचवर्षीय	- 1200 रु.	$ 250
वार्षिक	- 300 रु.	$ 60
एक प्रति	- 15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर

खाता संख्या : 310102010041518

IFSC CODE- UBIN 0531014

MICR CODE- 313026001

में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२६
भाद्रपद कृष्ण एकादशी
विक्रम संवत्
२०८३
दयानन्दाब्द
२०२

September - 2026

समाचार २१

हलचल ३०

०४	वेद सुधा
१३	आर्य समाज का स्वर्णिम अतीत
१६	पंजाब की भाषा और लिपि की समस्या
२०	सत्यार्थ मित्र बनें
२१	जीवन अमृत
२३	क्या महर्षि दयानन्द भांग का सेवन करते थे?
२५	कथा सरित- कहानी दयानन्द की
२७	८०वें स्वतंत्रता दिवस पर तिरंगा रैली

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सत्यार्थ सौरभ पत्रिका में AI GENERATED IMAGES का प्रयोग किया गया है।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	4000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १५ अंक - ०५

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

वेद का आर्थिक दृष्टिकोण

गतांक से आगे.......

एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर।। - ऋग्वेद १/८/१

ऋषिः- मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः।। **देवता-** इन्द्रः।। **छन्दः-** निचृद्गायत्री।।

इस यज्ञ का कितना महत्त्व है, वह इतने से समझिये कि चारों वेदों में एक प्रश्न है-

''पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः।'' - ऋग्वेद १/१६४/३४, यजुर्वेद २३/६१, अथर्ववेद ६/१०/१४

'समस्त संसार जिस पर टिका है, वह 'नाभि'= केन्द्र-बिन्दु कहाँ है?' इस प्रश्न का चारों वेदों में एक ही उत्तर है-

''अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः''- यह यज्ञ की भावना, अर्थात् बाँटकर खाने की भावना ही वह केन्द्र बिन्दु है, जिस पर यह दुनिया चल रही है। जहाँ यह भावना नष्ट होती है, वहीं गतिरोध उत्पन्न हो जाता है।

एक परिवार के चार भाई अपनी कमाई को, चाहे किसी की कम हो, चाहे अधिक, परिवार के अर्पण करके समानरूप से उपभोग करते हैं। वहाँ उनमें प्रेम और सौहार्द बढ़ता है। जहाँ एक के मन में स्वार्थ उत्पन्न होकर व्यवहार की सरसता समाप्त हो जाती है, वहीं से परिवार का बिखराव हो जाता है।

अतएव धन के उपभोग के लिए वेद की पहली शर्त है **''सानसिम्''** बाँट के खाओ। आपने यह सब कुछ समाज के सहारे ही कमाया है, इसलिए उसका भाग भी इसमें समाविष्ट है। वेद आपको उसका स्वामित्व देकर स्वतः बाँटने का परामर्श दे रहा है। इससे आपको यश और गौरव भी मिलेगा तथा इस त्याग का भविष्य में फल भी होगा।

एक बार एक कम्युनिस्ट सज्जन कहने लगे कि- धन के उपभोग के विषय में वेद के भी लगभग वही विचार हैं, जो कम्युनिज्म के हैं। अन्तर केवल इतना है कि कम्युनिज्म कमाई को केन्द्र में जमा कर वहाँ से आवश्यकता अनुसार बाँटने को कहता है, वेद व्यक्ति को स्वयं ही बाँटने का परामर्श देता है। उन्होंने कहा- 'मुख्य बात बाँटना है, चाहे उसे ऊपर से राज्य-व्यवस्था बाँटे और चाहे व्यक्ति।'

मैंने इसके उत्तर में कहा- "कामरेड महाशय! वेद के बाँटने में और कम्युनिज्म के बाँटने में इतना अन्तर है जितना आकाश और पृथिवी में। वेद ने व्यक्ति की स्वाधीनता को अक्षुण्ण रखकर उसे बाँटने का सत्परामर्श दिया है। इस बाँटने का नाम त्याग है। कम्युनिज्म ने व्यक्ति से उसकी कमाई का अपहरण कर लिया, उस परिश्रम का उसे न नाम मिला, न यश, इस बाँटने का नाम वियोग है। त्याग राजा हरिश्चन्द्र के समान सर्वस्व का ही क्यों न हो, वह दाता के मन में सुख और हर्ष उत्पन्न करेगा, क्योंकि किसी की पात्रता को समझकर जो कुछ किया है, उसने स्वयं किया है। इसके विपरीत, स्वामी की इच्छा और सहमति के बिना किसी के पाँच पैसे का अपहरण भी उसके मन में दुःख उत्पन्न करेगा, उसके मन में प्रतिक्रिया होगी- ये पैसे मेरे थे, उसे इनको मुझसे लेने का क्या अधिकार था? इस पार्थक्य का नाम है वियोग। त्याग का परिणाम सुख और वियोग का परिणाम दुःख होता है।" सांख्यकार कपिल मुनि ने एक सुन्दर उदाहरण दिया है-

श्येनवत् सुखी दुःखी भवति, त्यागवियोगाभ्याम्।

'पक्षी की चोंच में टुकड़ा है, उसे वह स्वयं छोड़ दे तो उसे कोई क्लेश नहीं, इसी का नाम त्याग है और इसका परिणाम सुख है। इसके विपरीत इसकी चोंच के टुकड़े को देखकर, उस पर

आक्रमण करके किसी दूसरे ने बलपूर्वक उससे छीन लिया तो उसको दुःख होता है, इसक नाम वियोग है। वियोग का परिणाम दुःख और त्याग का परिणाम सुख होता है।'

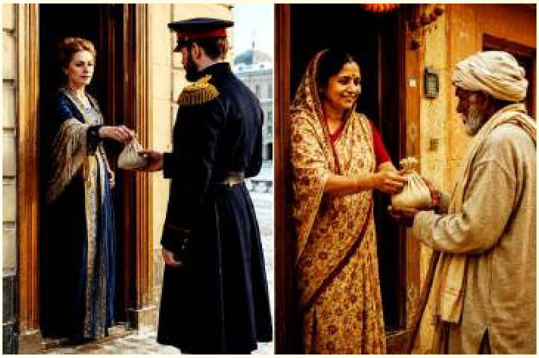

कम्युनिज्म के सिद्धान्त मनोविज्ञान के विपरीत हैं, अतः वे कभी चरितार्थ नहीं हो सकते। एक समय था जब विवाह को भी इस सिद्धान्त के नशे में पूँजीवाद का अंश माना जाता था कि एक पुरुष एक स्त्री पर इस प्रकार अपना अधिकार जमाकर रक्खे- यह साम्यवाद के विपरीत है। परीक्षण किये गए और अनेक प्रकार के झगड़े और बीमारियाँ समाज में फैलीं तो वह नशा उतरा। यही अवस्था सम्पत्ति के विषय में भी होगी। यद्यपि पहले से परिवर्तन आ गया है, किन्तु आगे-आगे और भी आवेगा।

सन् १७ की क्रान्ति के बाद कम्युनिज्म के सुहावने सिद्धान्तों को व्यवहार की कसौटी पर परखने का अवसर आया। कम्युनिज्म के दो ही आधार सूत्र हैं- पहला "प्रत्येक को अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार काम करना चाहिए।" दूसरा- "प्रत्येक को अपनी आवश्यकतानुसार उपभोग-सामग्री मिलनी चाहिए।"

क्रान्ति के बाद इन सिद्धान्तों को परखा गया। यद्यपि रूस में उस समय कारखाने अमेरिका की तुलना में नहीं के बराबर थे, उन कारखानों को उनके स्वामियों से छीनकर मजदूरों को बुलाकर कहा गया कि आज से इन कारखानों के स्वामी तुम हो; तुममें से प्रत्येक व्यक्ति को उतना काम करना चाहिये, जितनी तुम्हारी योग्यता और शक्ति है। दूसरी बात कही कि इसकी कमाई में से तुम्हें अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए पैसा भी लेना चाहिए। इस नये परिवर्तन से एक हर्ष की लहर दौड़ गई, किन्तु परिणाम यह निकला कि छह मास में ही सब कारखाने दिवालिया हो गए। कारण यह था कि अपवाद को छोड़कर मनुष्य की दो जन्मजात दुर्बलताएँ हैं। वह काम के समय अपनी शक्ति को बचाकर रखना चाहता है और खाने के समय बढ़कर हाथ मारना चाहता है ।

आप एक व्यक्ति को कहिए कि वह 'एक महीने में जितना काम कर सकता है एक साथ बता दे, ताकि उसे महीने भर का काम सौंप दिया जाए।' इस बात को सुनते ही वह फूँक-फूँककर कदम रखेगा कि कहीं अधिक न बता जाऊँ कि महीने भर तक हड्डियाँ घिसनी पड़ें! अब उसी व्यक्ति से दूसरा प्रश्न कीजिए कि- 'महीने भर की तुम अपनी सब आवश्यकताएँ बता दो ताकि सब सामग्री एक साथ मँगवा दी जावे।' इस बात को सुनकर वह सोचने में समाधि लगा देगा कि कोई कसर न रह जाए कि तंगी उठानी पड़े!

लेनिन एक दूरदर्शी नेता था, वह सिद्धान्त के पीछे सत्ता को नहीं खोना चाहता था। उसने परिस्थिति को भाँपकर परिवर्तन किया। प्रत्येक कारखाना एक-एक मैनेजर के अधिकार में दे दिया और उसे बताया कि वह प्रत्येक कर्मचारी से क्षमताभर काम कराए और प्रत्येक को उसका पारिश्रमिक भी दे। कर्मचारियों को बुलाकर कह दिया कि तुम्हारे सब कामों की देखभाल ये करेंगे और ये ही तुम्हें योग्यता और श्रम के आधार पर वेतन देंगे। उस वेतन में तुम्हारा निर्वाह कैसा होता है, इसका दायित्व सरकार पर नहीं है।

इस परिवर्तन से कारखानों की हालत सुधरी और काम चलने लगा। अब बताइए, यह प्रगति कम्युनिज्म के सिद्धान्तों पर हुई अथवा उन्हें त्यागकर?

रूस का उन्नति करना पृथक् बात है और कम्युनिज्म के सिद्धान्तों का सफल होना दूसरी बात है।

आगे चलकर सन् ३५ में तो कुछ ऐसे क्रान्तिकारी परिवर्तन रूस में किये गए, जिनमें कुछ अंशों में सम्पत्ति उत्तराधिकार में भी दी जाने लगी। अतः व्यवहार्य सिद्धान्त वेद का ही सिद्ध हुआ कि धन का पहला सदुपयोग यह है कि उसे बाँटकर खाया जाए।

धन के साथ दूसरी शर्त है **'सजित्वानम्'**- धन प्राप्त करके विजेता बने रहो। धन के साथ ९९ प्रतिशत स्थानों पर यह बुराई आ जाती है कि वह अन्दर और बाहर के शत्रुओं से घिर जाता है। मनुष्य के आन्तरिक शत्रु छह हैं- काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मात्सर्य। ये शास्त्रीय भाषा में **'षड्रिपु'** कहलाते हैं। धन के आते ही ये उस पर टूट पड़ते हैं। काम इच्छा को कहते हैं। धन के आते ही इच्छा छलांग लगाने लगती है। व्यक्ति संसार के सुखोपभोग की सब सामग्री का संग्रह करना चाहता है। पैसे के आते ही क्रोध बढ़ जाता है। थोड़ी-थोड़ी बात पर आगबबूला होकर धनी व्यक्ति बड़े-बड़े घातक काम कर बैठते हैं। ज्यों-ज्यों धन आता है, संग्रह की आग, लोभवृत्ति और भी भड़क उठती है। यही अवस्था सभी बुराइयों की होती है। अतः वेद चेतावनी देता है कि पहले अन्दर के शत्रुओं को जीतो! पैसा आते ही इच्छा इतनी पागल न बना दे कि अनावश्यक वस्तुओं के संग्रह की ओर दौड़ पड़ो। पहले यह देखो कि यह उपयोगी है अथवा नहीं? तब अगला कदम उठाओ। क्रोध एक राक्षसी प्रवृत्ति है, जो अपने से दुर्बल को दबाने के लिए जागृत होती है। क्रोध वीरता का नहीं, क्रूरता का द्योतक है। शास्त्रीय विश्लेषण की दृष्टि से वीर रस का स्थायीभाव उत्साह है और क्रोध का स्थायीभाव रौद्र रस है। अत्याचार के विनाश के लिए मर मिटने की भावना का नाम वीरता है और दुर्बल पर अत्याचार करने की प्रवृत्ति क्रोध है। अतः धन आने पर इस शत्रु को न उभरने दें।

इस प्रकार आत्मनिरीक्षण कर जिसने शत्रुओं को जीत लिया, उसके लिए बाह्य शत्रुओं को जीतना बाएँ हाथ का खेल है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जो धन और राज्य 'श्री' के आने पर भोगविलास में लिप्त हो गए, वे समाप्त हो गए। जो इन्द्रियजयी और कर्त्तव्यपरायण रहे, वे फूलते-फलते चले गए। अतः धन के सम्बन्ध में दूसरी बात कही विजेता बने रहो!

मन्त्र की तीसरी बात है **'सदासहम्'**- सदा स्वावलम्बी और सहनशील बनो। धन के आने के साथ प्रायः एक तीसरी कमी आती है- आराम से रहने की। छोटी-छोटी आवश्यकताओं की पूर्ति भी बिना नौकर के नहीं हो पाती। यह दोष है। दूसरे से आपको सेवा कराने का तभी अधिकार है, जब आप अधिक महत्त्वपूर्ण काम में संलग्न हों, केवल पैसों के आधार पर नहीं।

कल्पना कीजिये, हमारे पूर्वज भी आज के धनियों के समान परावलम्बी होते, तो क्या राम वन जाने तथा पाण्डव भी वन जाने के साथ-साथ अज्ञातवास के एक वर्ष में भिन्न-भिन्न सेवा-कार्य कर सकते थे? क्या द्रौपदी महारानी होकर भी दासी का काम सफलता और निपुणता से कर सकती थी? कदापि नहीं।

लक्ष्मी चंचला होती है। अपने स्वभाव को सदा संयत और जीवन को स्वावलम्बी रखना चाहिए ताकि प्रतिकूल परिस्थितियाँ भी मनुष्य की जीवनधारा को अवरुद्ध न कर सकें।

मन्त्र की चौथी बात है **'वर्षिष्टम्'**- यह धन वैभव देर तक, पुत्र-पौत्र की परम्परा तक चलता चला जावे। दूसरे शब्दों में यह कह दिया कि धन की कमाई के साधन पवित्र होने चाहिएँ, तभी वह चिरस्थायी हो सकता है, क्योंकि झटके की कमाई देर तक नहीं चलती। चाणक्य ने तो सीमा रेखा ही खींच दी है-

अन्यायोपार्जितं द्रव्यं दश वर्षाणि तिष्ठति।
प्राप्ते चैकादशे वर्षे समूलं तद् विनश्यति।। - चाणक्य नीति १५/६

अन्याय से कमाया धन १० वर्ष तक रहता है। जहाँ ११वाँ वर्ष लगा कि मूल को भी साथ लेकर नष्ट हो जाता है। इसलिए चौथी शर्त में कहा गया है कि धन धार्मिक ढ़ंग से उपार्जित करो। धोखाधड़ी और छल-छिद्र का व्यवहार नहीं होना चाहिए।

संकलन कर्त्ता एवं भाष्यकार- पण्डित शिवकुमार शास्त्री
साभार- श्रुति-सौरभ

आत्म निवेदन

उँगलियों से देखने वाली लड़की: रोज़ा कुलेशोवा (Rosa Kuleshova) एक और जादुई भ्रम का पर्दाफाश

कल्पना कीजिए कि किसी की आँखों पर एक मोटी काली पट्टी बँधी हो, लेकिन जैसे ही वह अपने हाथों की उँगलियों को किसी अखबार या रंगीन कागज पर फेरता है, तो वह बिल्कुल सही-सही बता देता है कि वहाँ क्या लिखा है या वह कौन सा रंग है। है न यह अद्भुत आश्चर्य? प्रश्न यह है कि क्या उँगलियाँ भी देख सकती हैं? १९६० के दशक में सोवियत संघ (रूस) की एक आम लड़की ने पूरी दुनिया के वैज्ञानिकों को यही सोचने पर मजबूर कर दिया था। उस लड़की का नाम था- रोज़ा कुलेशोवा। यह कहानी है इतिहास के सबसे चर्चित "डर्मल ऑप्टिक परसेप्शन" (DOP) यानी त्वचा से देखने के दावे की, जिसने कुछ समय के लिए विज्ञान की नींव ही हिला दी थी।

उँगलियों में छिपी 'आँखें': एक चमत्कार का जन्म

१९६२ का समय था। रूस के यूराल (Ural) इलाके में रहने वाली रोज़ा कुलेशोवा ने एक ऐसा दावा किया जिसने रातों-रात उसे एक वैश्विक हस्ती बना दिया। रोज़ा का कहना था कि उसके पास डर्मल ऑप्टिक परसेप्शन (DOP) की शक्ति है। इसका मतलब था कि वह अपनी त्वचा, खासकर अपनी उँगलियों के पोरों (Fingertips) का इस्तेमाल करके रंगों को महसूस कर सकती है और छपे हुए शब्दों को पढ़ सकती है।
जब यह खबर फैली, तो रूस के बड़े-बड़े डॉक्टर, न्यूरोलॉजिस्ट और मनोवैज्ञानिक रोज़ा की जाँच के लिए दौड़ पड़े।

शुरुआती परीक्षणों में जो हुआ, वह चौंकाने वाला था:

रोज़ा की आँखों पर गहरी पट्टियाँ बाँधी गईं। उसके सामने अखबार, मैगजीन और अलग-अलग रंगों के कार्ड रखे गए। रोज़ा ने अपनी उँगलियाँ उन पर फेरीं और बिल्कुल सही-सही सब कुछ पढ़ दिया और रंगों को पहचान लिया!

शोहरत की बुलंदियाँ और विज्ञान का भ्रम

देखते ही देखते रोज़ा सोवियत संघ का गौरव बन गई। कई प्रतिष्ठित वैज्ञानिक पत्रिकाओं में उस पर शोध-पत्र छपने लगे। उस समय शीत युद्ध (Cold War) का दौर था, और सोवियत संघ को लगा कि उन्होंने मानव क्षमता का एक ऐसा रहस्य खोज लिया है जो दुनिया में किसी के पास नहीं है। अतः उन्होंने किसी वैज्ञानिक

जाँच की अपेक्षा रोज़ा के जादू को स्वीकृति एवं रोजा की प्रसिद्धि को महत्त्व दिया।
जब आप किसी बात को मानने लगते हो तो फिर उसके समर्थन में थोथे तर्क भी अकाट्य लगने लगते हैं। रोज़ा का यह जादू इतना पक्का लगता था कि लोग मानने लगे थे कि इंसान की त्वचा में रोशनी को महसूस करने वाले खास रिसेप्टर्स होते हैं, जिन्हें ट्रेनिंग से जगाया जा सकता है। रोज़ा एक अन्तर्राष्ट्रीय सनसनी बन चुकी थी। जो राइन (J. B. Rhine) की ड्यूक लैब ने जिन दावों का खण्डन किया था, रोज़ा कुलेशोवा का मामला उन सबमें सबसे ज्यादा “असली” लग रहा था।

शक की सुई: जादूगरों की एन्ट्री

लेकिन विज्ञान में कोई भी चमत्कार तब तक सच नहीं माना जाता, जब तक वह हर तरह की सख्त कसौटी पर खरा न उतरे। एक बात और, ऐसी जाँचों में हमें जादूगरों का महत्त्व नहीं भूलना चाहिए, ये वे लोग हैं जो स्वयं ही इस प्रकार के शो करते रहते हैं। यह उनकी ईमानदारी है कि वे इसे अलौकिक चमत्कार न बताकर हाथ की सफाई बताते हैं। यही कारण है कि जिन ट्रिक्स को वैज्ञानिक नहीं पकड़ पाते, जादूगर समझ लेते हैं। हमारी इस शृंखला में अनेक दावों की पोल जादूगरों ने खोली, यह आप स्पष्ट देखेंगे।

फिर से नोज पीक का कमाल

दुनिया भर के जादूगरों (Magicians) और संशयवादियों (Skeptics) को रोज़ा की इस क्षमता पर शक होने लगा। जादूगरों का कहना था कि आँखों पर बँधी पट्टी कभी भी पूरी तरह से रोशनी को नहीं रोक सकती। हमारी नाक के दोनों तरफ एक छोटी सी जगह होती है, जिसे जादूगरों की भाषा में “नोज़ पीक” (Nose Peek) कहा जाता है। अगर कोई व्यक्ति अपना सिर थोड़ा पीछे झुका ले या आँखों को खास तरीके से घुमाए, तो वह उस छोटी सी जगह से नीचे की तरफ साफ देख सकता है।

कड़े नियम और सच्चाई का पर्दाफाश

जब जाँच का दूसरा दौर शुरू हुआ, तो नियम बेहद सख्त कर दिए गए। अब वैज्ञानिकों ने जादूगरों की सलाह पर ऐसे नियंत्रण (Controls) लगाए जहाँ से झाँकना नामुमकिन था।

अपारदर्शी बॉक्स : रोज़ा के हाथों को एक ऐसे बॉक्स के अन्दर डालकर पढ़ने को कहा गया, जिसके आर-पार नहीं देखा जा सकता था।

पट्टी के साथ कार्डबोर्ड : आँखों की पट्टी के साथ-साथ उसकी ठुड्डी (Chin) के नीचे एक कार्डबोर्ड लगा दिया गया ताकि वह नीचे की तरफ बिल्कुल न देख सके।

और यहीं रोजा का ‘‘जादू’’ टूट गया।

जैसे ही उसे झाँकने का वह छोटा सा मौका (Nose peek) मिलना बन्द हुआ, उसकी उँगलियों ने “देखना” बन्द कर दिया। कड़े वैज्ञानिक नियमों के तहत वह न तो रंग पहचान पाई और न ही एक भी शब्द पढ़ पाई।

परीक्षण पूरी तरह से असफल हो गया

आर्टिफिशियल स्लीव्स (Artificial Sleeves) का वो आखिरी चैलेन्ज जिसने तोड़ा सारा तिलिस्म

रोज़ा कुलेशोवा की कहानी में “आर्टिफिशियल स्लीव्स” (Artificial Sleeves) वाले परीक्षण का किस्सा सबसे रोमांचक और निर्णायक माना जाता है। जब जादूगरों ने “नोज़ पीक” (नाक के पास से झाँकने की कला)

की ओर वैज्ञानिकों का ध्यान खींचा, तो यह तय किया गया कि रोज़ा का ऐसा टेस्ट लिया जाएगा जिसमें झाँकने की ०.१% गुंजाइश भी न बचे।

यहीं पर एंट्री हुई एक खास तौर पर बनाए गए उपकरण की!

वह बॉक्स और स्लीव्स का चक्रव्यूह

वैज्ञानिकों ने एक ऐसा अपारदर्शी (Opaque) बॉक्स तैयार किया, जिसके अन्दर देखना बाहर से बिल्कुल

नामुमकिन था। इस बॉक्स में सामने की तरफ दो "आर्टिफिशियल स्लीव्स" (अपारदर्शी आस्तीनें) लगी हुई थीं। यह बिल्कुल वैसा ही था जैसे किसी लेबोरेटरी में खतरनाक केमिकल्स को छूने के लिए वैज्ञानिक ग्लव्स वाले बॉक्स का इस्तेमाल करते हैं।

रोज़ा को अपनी आँखों पर पट्टी बाँधनी थी। उसे अपने दोनों हाथ उन लम्बी, अंधेरी 'आर्टिफिशियल स्लीव्स' के अन्दर डालने थे। स्लीव्स के दूसरे सिरे पर, उस बन्द बॉक्स के अन्दर रंगीन कागज, अखबार की कटिंग और ताश के पत्ते रखे गए थे।

रोज़ा को अब सिर्फ अपनी उँगलियों से छूकर बताना था कि बॉक्स के अन्दर क्या है।

इस सेटअप का मतलब था कि रोज़ा की आँखें और उसके हाथ के बीच एक अभेद्य दीवार खड़ी कर दी गई थी। अब सिर घुमाने या नाक के नीचे से झाँकने की कोई भी चालाकी काम नहीं आ सकती थी।

जब उंगलियों की ''आँखें'' अन्धी हो गईं...

जैसे ही रोज़ा ने अपने हाथ उन स्लीव्स के अन्दर डाले, कमरे में सन्नाटा छा गया। वैज्ञानिक साँसें रोककर देख रहे थे। रोज़ा की उंगलियाँ बॉक्स के अन्दर रखे कागजों पर तेजी से घूमने लगीं। वह बार-बार कागजों को रगड़ रही थी, शब्दों की बनावट और रंगों को महसूस करने की पूरी कोशिश कर रही थी। लेकिन समय बीतता जा रहा था और रोज़ा के चेहरे पर घबराहट साफ नजर आने लगी। जो लड़की पहले सेकण्डों में पूरा वाक्य पढ़ लेती थी, वह अब एक अक्षर नहीं पहचान पा रही थी।

घण्टों की जद्दोजहद के बाद, पसीने से तर-बतर रोज़ा को आखिरकार हार माननी पड़ी। आर्टिफिशियल स्लीव्स के उस अँधेरे बॉक्स में उसकी उँगलियों का सारा "जादू" खत्म हो चुका था। वह न तो कोई रंग बता सकी और न ही कोई शब्द पढ़ सकी।

और चालाकी हार गयी

इस एक टेस्ट ने पूरी दुनिया के सामने यह साबित कर दिया कि इंसान की उँगलियों में कोई "छठी इन्द्री" या रोशनी महसूस करने वाले रिसेप्टर्स नहीं होते। रोज़ा का डर्मल ऑप्टिक परसेप्शन (DOP) कोई चमत्कार नहीं था, बल्कि यह सिर्फ आँखों पर बँधी पट्टी में मौजूद किसी छोटी सी दरार (Peek) का कमाल था।

"आर्टिफिशियल स्लीव्स" वाले इस ऐतिहासिक चैलेन्ज ने न सिर्फ रोज़ा कुलेशोवा के दावों की हवा निकाल दी, बल्कि हमेशा के लिए यह साबित कर दिया कि जब जाँच के नियम सख्त हों, तो कोई भी इल्यूजन (भ्रम) विज्ञान की आँखों में धूल नहीं झोंक सकता।

अब एक प्रश्न अवश्य उठता है कि रोजा कुलेशिवा को इतनी प्रसिद्धि क्यों मिली , क्यों बड़े बड़े वैज्ञानिकों ने

उसकी संस्तुति की?

समझा जाता है कि उस समय अमेरिका और सोवियत संघ (रूस) के बीच हर चीज में खुद को बेहतर साबित करने की होड़ थी। सोवियत वैज्ञानिक दुनिया को यह दिखाना चाहते थे कि उनके देश के नागरिकों के पास 'सुपरह्यूमन' (अतिमानव) क्षमताएँ हैं। इसलिए उन्होंने बिना कड़े नियमों के इन दावों को सच मान लिया और इसे एक राष्ट्रीय उपलब्धि की तरह पूरी दुनिया में प्रचारित किया।

ik[k.M dk x<+ku dk Çf"k n;kuUn vk, Fk

कहानी का अन्त

रोज़ा कुलेशोवा, जो कभी विज्ञान के लिए एक अजूबा थी, कड़े परीक्षणों में महज एक चतुर चाल (Trick) करने वाली साबित हुई। यद्यपि उसने इस ट्रिक का बहुत अच्छे से अभ्यास किया था ताकि वह लोगों को चकमा दे सके।

उसका पतन उतनी ही तेजी से हुआ जितनी तेजी से उसे शोहरत मिली थी। यह कहानी आज भी विज्ञान की दुनिया में एक बहुत बड़ा सबक मानी जाती है कि कैसे एक साधारण सी चाल बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को भी चकमा दे सकती है, और क्यों किसी भी असाधारण दावे को साबित करने के लिए असाधारण और सख्त सबूतों की जरूरत होती है। रोज़ा कुलेशोवा का "डर्मल ऑप्टिक परसेप्शन" अंततः 'पारोप्टिक इल्यूजन' (दृष्टि भ्रम) के इतिहास का एक और बन्द पन्ना बनकर रह गया।

इस लेख को पढ़ते हुए हमें इसे "एक भ्रम के जन्म और उसके प्रचार" की कहानी के रूप में देखना चाहिए। यह इस बात का सटीक उदाहरण है कि कैसे बड़े-बड़े पढ़े-लिखे लोग और वैज्ञानिक भी चमत्कार की उम्मीद में बुनियादी गलतियां कर बैठते हैं। वे तब तक इस धोखे में रहते हैं, जब तक कि जादूगरों की सलाह पर बनाए गए सख्त नियम (जैसे आर्टिफिशियल स्लीव्स) उस तिलिस्म को तोड़ न दें। आगामी विवरणों में आप देखेंगे कि ऐसे कारनामे अप्रमाणित होने के पश्चात् भी लोगों में आकर्षण का केन्द्र बने रहे, यह मनुष्य का चमत्कारों के प्रति प्रवृत्ति है।

परामर्श– परीक्षण हेतु सभी साधन परीक्षणकर्त्ता को स्वयं लाने चाहिए। पूरे विश्व में एक इसी सावधानी ने अच्छे-अच्छे दावों की कलई खोल दी। जैसे उक्त परीक्षण में स्क्रीन, स्लीव्स व बक्सा सारे परीक्षण कर्त्ताओं के थे।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

सत्यार्थ सौरभ की रजिस्टर्ड पोस्टल सेवा

सत्यार्थ सौरभ के सम्मानित सदस्यगण! हमें पता है कि आप लोगों में से अनेकों को सत्यार्थ सौरभ पत्रिका या तो समय से नहीं मिलती है या फिर मिलती ही नहीं है। इसलिए न्यास ने एक निर्णय लिया है कि अगर आप एक वर्ष में रूपये 542/- (Postage हेतु) देते हैं तो आपको पत्रिका रजिस्टर्ड भेजी जाएगी। ताकि फिर भी पत्रिका प्राप्त नहीं होती है तो आप पोस्ट ऑफिस में शिकायत दर्ज करवा सकते हैं जिससे ये समस्या सुलझ सकती है।

मदन लाल ढींगरा एक निर्भीक क्रान्तिकारी

मदन लाल ढींगरा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के उन चमकते सितारों में से हैं, जिनकी चमक ने सात समन्दर पार ब्रिटिश साम्राज्य की नींद उड़ा दी थी।

अंग्रेजों के वफादार परिवार का विद्रोही बेटा

मदन लाल ढींगरा का जन्म १८ सितम्बर १८८३ में अमृतसर के एक बेहद सम्पन्न परिवार में हुआ था। उनके पिता डॉ. दित्तामल ढींगरा अमृतसर के पहले भारतीय मुख्य चिकित्सा अधिकारी थे और ब्रिटिश हुकूमत के पक्के वफादार थे। परिवार में ऐशो-आराम की कोई कमी नहीं थी। छात्र जीवन में ही स्वदेशी के दीवाने मदन लाल ने विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया, तो उनके पिता इतने नाराज हुए कि उन्होंने मदन लाल को घर से निकाल दिया। परन्तु इसके बाद मदन लाल ने पैतृक घर की ओर मुड़ कर नहीं देखा और शिमला में क्लर्क और मुम्बई में कुली तक का काम किया, लेकिन अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया।

बाद में, उनके बड़े भाई की सलाह और आर्थिक मदद से वे १९०६ में मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के लिए यूनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन चले गए। लंदन में ढींगरा श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा स्थापित 'इण्डिया हाउस' के सम्पर्क में आए, जो वीर सावरकर जैसे क्रान्तिकारियों का भी स्थान था।

यहाँ एक रुचिकर प्रसंग भी सामने आता है जब सावरकर जी ने मदन लाल की दृढ़ता की परीक्षा ली। एक दिन जब ढींगरा मेज पर हाथ रखे बैठे थे, सावरकर ने अचानक एक सूई ढींगरा के हाथ के आर-पार कर दी। ढींगरा के चेहरे पर दर्द की एक शिकन तक नहीं आई और न ही उनके मुँह से कोई आवाज निकली। उनकी इस अद्भुत सहनशक्ति और दृढ़ निश्चय को देखकर सावरकर समझ गए कि यह युवा मातृभूमि के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान देने के लिए तैयार है।

कर्जन वायली का वध

१ जुलाई १९०९ का दिन लंदन के इम्पीरियल इंस्टीट्यूट में 'नेशनल इण्डियन एसोसिएशन' का एक कार्यक्रम चल रहा था। भारत सचिव का राजनीतिक सलाहकार, सर विलियम हट्ट कर्जन वायली वहाँ मौजूद था। कर्जन वायली भारत में ब्रिटिश क्रूरता और भारतीय छात्रों की जासूसी का मुख्य रणनीतिकार माना जाता था। ढींगरा अपनी जेब में दो पिस्तौल लेकर वहाँ पहुँचे थे। जैसे ही कर्जन वायली कार्यक्रम से बाहर निकलने लगा, ढींगरा उसके सामने आ गए और बिल्कुल करीब से उस पर गोलियाँ दाग दीं। वायली वहीं ढेर हो गया। ढींगरा ने भागने का कोई प्रयास नहीं किया। जब उन्हें

गिरफ्तार किया गया, तो उनके चेहरे पर एक अजीब सा सुकून और शान्ति थी।

लंदन के 'ओल्ड बेली' (Old Bailey) न्यायालय में ढींगरा पर मुकदमा चला। ढींगरा ने अदालत में अपना बचाव करने के लिए किसी वकील को नहीं रखा। उन्होंने ब्रिटिश अदालत की वैधता को ही मानने से इनकार कर दिया। उन्होंने कहा- "जहाँ तक मेरा सवाल है, किसी भी अंग्रेजी कानून या अदालत को मुझे गिरफ्तार करने, जेल में रखने या मुझे मौत की सजा सुनाने का कोई अधिकार नहीं है।" उन्होंने अंग्रेजों के दोहरे मापदण्डों पर प्रहार करते हुए कहा- "मेरा मानना है कि यदि कोई अंग्रेज अपने देश पर जर्मनों के कब्जे के खिलाफ लड़ता है और उसे देशभक्ति माना जाता है, तो मेरे मामले में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ना उससे कहीं अधिक न्यायसंगत और देशभक्तिपूर्ण है।"

ढींगरा ने अदालत में डंके की चोट पर कहा, "मैं पिछले पचास वर्षों में आठ करोड़ (८० मिलियन) भारतीयों की हत्या के लिए अंग्रेजों को जिम्मेदार मानता हूँ; और वे हर साल भारत से १० करोड़ पाउण्ड (£१००,०००,०००) अपने देश ले जाने के लिए भी जिम्मेदार हैं। हमारी पवित्र भूमि को अपवित्र करने वाले अंग्रेज को मारना हमारी ओर से पूरी तरह से न्यायसंगत है। अदालत में सन्नाटा छा गया। सब तरफ मदन लाल के साहस की चर्चा होने लगी। परन्तु विडम्बना देखिये मदन लाल के ब्रिटिश राजभक्त परिवार को क्या कहें? अपने ही लाल के अन्तिम संस्कार से साफ मना कर दिया।

मदनलाल ढींगरा को १७ अगस्त १९०९ को लंदन की पेंटनविले जेल (Pentonville Prison) में फांसी दी गई थी। उनके परिवार द्वारा उन्हें अपनाने से इनकार करने और उनके ब्रिटिश विरोधी कार्यों के कारण, ब्रिटिश अधिकारियों ने हिन्दू रीति-रिवाजों से अंतिम संस्कार करने से मना कर दिया। उन्हें जेल की दीवारों के भीतर ही एक अज्ञात कब्र में दफना दिया गया था। अपने को गर्व से राम-कृष्ण की सन्तान बताने वाले मदन लाल को अन्तिम यात्रा भी हिन्दू धर्म के अनुसार नसीब नहीं हुयी।

(**दृष्टव्य**- गिरफ्तारी के समय उनकी जेब से एक लिखित बयान भी मिला था, जिसे ब्रिटिश सरकार ने दबाने की कोशिश की थी। इस बयान में उन्होंने लिखा था: "एक हिन्दू के रूप में मुझे लगता है कि मेरे देश के साथ किया गया गलत व्यवहार ईश्वर का अपमान है। देश का काम ही श्रीराम का काम है! देश की सेवा ही श्री कृष्ण की सेवा है!")

६७ वर्षों तक उनके अवशेष वहीं जेल में दबे रहे।

जब सरदार ऊधम सिंह के अवशेषों की खोज हुयी तो मदन लाल के अवशेष भी मिले। तत्कालीन भारत सरकार और स्थानीय समूहों के निरन्तर प्रयासों के परिणामस्वरूप, १२-१३ दिसम्बर १९७६ को मदनलाल ढींगरा के अवशेषों को भारत वापस लाया गया।

उनके अवशेषों का दिल्ली में पूरे राजकीय सम्मान के साथ स्वागत किया गया। इसके बाद उन्हें उनके जन्म स्थान अमृतसर ले जाया गया, जहाँ उनका अन्तिम संस्कार किया गया। उनकी अस्थियों को महाराष्ट्र के अकोला शहर के एक मुख्य चौराहे पर भी रखा गया है, जिसका नामकरण उन्हीं के सम्मान में किया गया है।

भारत माँ के ऐसे जियालों के जीवन्त दर्शन-नमन करने राष्ट्र-मन्दिर; नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, गुलाब बाग, उदयपुर अवश्य पधारें।

प्रस्तुति- श्रीमती दुर्गा गोरमात
नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, गुलाब बाग

vk;l lekt dk Lof.ke vrhr

गतांक से आगे......

भारत आजाद हुआ। देश की शासन सत्ता उन लोगों को मिली जिन्हें बहुत सारे लोग काले अंग्रेज कहकर याद करते हैं। जिन आर्य जनों ने स्वतन्त्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर भाग लिया था, वे इन काले अंग्रेजों के साथ फिट नहीं हो सके और बहुतों को इन लोगों ने आगे ही नहीं आने दिया। इधर देश के बंटवारे और पाकिस्तान बनने के कारण साम्प्रदायिक सद्भाव उखड़ गया और राजनीति दो भागों में विभक्त हो गई। एक काँग्रेस के रूप में, दूसरी हिन्दू महासभा, आर.एस.एस. व बाद में जनसंघ के रूप में। आर्यसमाजियों के लिए दोनों ओर मुश्किल थी फिर भी काँग्रेस उनके कुछ अधिक समीप थी। हिन्दूवादी लोग अपने साथ वह सब कुछ समेटे हुए थे जिसे स्वामी दयानन्द पाखण्ड, रूढ़ि और कुरीति कहते थे अतः काँग्रेस के साथ रहकर कार्य करने में आर्यों को कोई सैद्धान्तिक नुकसान नहीं था। यही कारण है कि आर्य समाज के अधिकांश पुराने नेता कांग्रेस पार्टी के भी सदस्य रहे। इसके अतिरिक्त छोटी जातियों के आर्य सदस्यों को कांग्रेस ही लाभदायक और निजहितों के समीप लगी।

कुछ समय पश्चात् आर्यसमाज की सम्पत्ति पर हिन्दूवादियों की नजर गई और उन्होंने उसे हथियाने की योजना बनाई। इन लोगों ने सर्वप्रथम आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण करना प्रारम्भ किया और येन केन प्रकारेण वहाँ फूट डालने और झगड़े कराने प्रारम्भ किए। जिन आर्यसमाजों में इनका वर्चस्व स्थापित हो गया, वहाँ से आर्यसमाज का मुख्य कार्य लुप्त हो गया। यहाँ तक कि गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द तक को इन्होंने गुरुकुल से निकाल दिया और भोजन के पैसे वसूल किए। इस प्रकार आर्यसमाज और उसकी शिक्षा संस्थाओं तथा आर्यसमाज की प्रतिनिधि और सार्वदेशिक सभा आदि में भी इन्हीं का वर्चस्व हो गया। इन लोगों ने स्वामी दयानन्द और उसके कार्यक्रम की निरन्तर अवहेलना की और योजना बद्ध ढंग से इन्हें तिरोहित करने के प्रयत्न किए।

अन्ततः एक समय ऐसा आया जब आर्य समाज के सर्वोच्च संस्थान सार्वदेशिक सभा पर हिन्दुवादी संगठनों के द्वारा प्रायोजित दो लोगों का कब्जा हो गया एक प्रधान बन गया दूसरा मन्त्री। इन दोनों ने आर्य समाज के संविधान में ऐसे संशोधन कर डाले जिससे आर्यसमाज की रीढ़ ही टूट गई। एक तो जो आय का शतांश हर सदस्य को देना आवश्यक था उस नियम को समाप्त करके एक सामान्य राशि का न्यूनतम शुल्क निर्धारित कर दिया और आर्थिक रूप से आर्य समाज को निर्बल कर दिया। दूसरा प्रस्ताव पास किया कि आर्यसमाज का सदस्य किसी भी राजनीतिक पार्टी का सदस्य हो सकता है। ऐसा करके आर्य समाज की राजनैतिक शक्ति समाप्त कर डाली। तीसरा कार्य किया कि आर्यसमाज की भूमि पर आर्यसमाज का कोई उपक्रम न चला कर या तो स्कूल खोल दिए या फिर दुकानें बना कर अपने भाई-भतीजों, रिश्तेदारों, जातिभाइयों और मिलने जुलने वालों को किराए पर उठवा दिया। आर्य समाजों में भगोड़ी शादियाँ करवाने

का धन्धा शुरू करवा दिया। आज आर्य समाज को वास्तविक रूप से आमजन जानते ही नहीं। भगोड़ी शादियों का धन्धा करने वाला यही उसका परिचय बन

चुका। लोग उसे यही समझते हैं। इसके बाद प्रत्येक आर्य समाज में झगड़े करवाकर अपने समर्थक गुट को मान्यता प्रदान करके बहुमत और योग्यता की अनिवार्यता को ही समाप्त कर दिया गया। वर्तमान में आर्यसमाज पर सर्वत्र उन्हीं माफियाओं का कब्जा हो चुका है। जो वस्तुत आर्यसमाजी हैं ही नहीं।

समाज भवनों में चलने वाले विद्यालयों पर कमेटियों ने कब्जा कर रखा है। इस प्रकार सारी मलाई ये माफिया गटक जाते हैं और आर्यसमाज के होठों पर थोड़ी सी चुपड़ देते हैं। इनकी औलाद हिन्दूवादी संगठनों से जुड़ी है और ये आर्य समाजियों के चौधरी बने बैठे हैं। कोई कुछ कहता है, नियम, कानून और सिद्धान्त की बात करता है तो उसकी पिटाई कर देते हैं, जान से मारने की धमकी देकर उसे डरा देते हैं। विरोध करने वालों को आर्य समाज से बहिष्कृत कर देते हैं और नए सदस्य बनाते ही नहीं। अपनी प्रशंसा और खुशामद करने वाले पालतू भजनोपदेशकों, उपदेशकों, संन्यासियों को बुला कर उत्सव करवाने का ढोंग करते हैं और सुनने वालों में मन्त्री, प्रधान, कोषाध्यक्ष, समाज का सेवक, पुरोहित और इन्हीं की पत्नियाँ होती हैं। इस प्रकार इन धूर्त्तों ने आर्य समाज का जनाधार ही नष्ट कर डाला है। ये लोग आर्य समाज में महर्षि दयानन्द का केवल नाम मात्र लेते हैं काम किसी और का करते हैं, सपने किसी अन्य के ही साकार करने में लगे हैं। वर्तमान में सबसे अधिक खतरा आर्यसमाज को हिन्दूवादियों से ही है।

इस प्रकार आर्यसमाज की सम्पत्ति कांग्रेस और हिन्दूवादी पार्टियों ने हथिया ली है और उसका राजनैतिक उपयोग हो रहा है। इन दोनों में से किसी की भी नीयत आर्यसमाज या दयानन्द का कार्य करने की नहीं है। इनकी रुचि सिर्फ एम.एल.ए. और एम.पी. या अन्य छोटे-बड़े राजनैतिक पद प्राप्त करने में ही है। ये लोग वास्तविक आर्यसमाजियों को निरुत्साहित करते रहते हैं, उन्हें आगे नहीं आने देते। आर्यसमाजों में जोड़-तोड़ करके मन्त्री, प्रधान बन जाते हैं, इसके लिए लड़ाई-झगड़ा और मुकद्दमें बाजी करते हैं। नवयुवकों और छोटी जाति के लोगों को आर्यसमाज का सदस्य नहीं बनाते।

वर्तमान में आर्यसमाज की स्थिति जैसा कि हमने पूर्व में स्पष्ट किया है उसके अनुसार वर्तमान आर्यसमाज में समाज का कोई भी लक्षण विद्यमान नहीं है। वह एक सहकारी संस्था-सी है। उसमें मूर्तिपूजा करने वाले, मांस-मदिरा-अण्डे खानेवाले, मृतक-श्राद्ध, मृत्यु-भोज करने वाले, मरे हुओं की हड्डियाँ गंगा में बहाने वाले, बीड़ी-सिगरेट, जर्दा खाने-पीने वाले, तस्कर, ब्लैक मार्केटियाँ, न जाने किस-किस तरह के लोग केवल सदस्य ही नहीं मन्त्री और प्रधान बने हुए नंगी आँखों से बहुतायत में देखे जा सकते हैं। आर्यसमाज में एक कर्मकाण्ड नहीं रहा। हर समाज में अलग-अलग तरीके से हवन होता है। हर पुरोहित का अपना अलग तौर-तरीका और अन्दाज है। कई तरह की लोकाचार पद्धतियाँ और पाखण्डपूर्ण क्रियाओं का सृजन करके नई-नई पुस्तकें छाप दी हैं। इस प्रकार आर्यसमाज में भी पण्डागिरी का भरपूर बोलबाला है।

वर्तमान में आर्यसमाज में कोई अनुशासन नहीं है। कोई पात्रता की योग्यता की परख करने की व्यवस्था नहीं है। जिसका जी चाहे संन्यासी बन जाय, जिसका जी चाहे उपदेशक-पुरोहित बन जाय। आज कल आर्यसमाज में योग के नाम पर भी बहुत बड़ा पाखण्ड पनप रहा है। जो लोग पतंजलि के योग सिद्धान्त और क्रियात्मक स्वरूप को रंचमात्र नहीं समझते, यम-नियम का पालन नहीं करते, वे लोग योगाचार्य और सिद्ध पुरुष मान

लिए गए हैं। ऐसे कई लोग तो करोड़पति भी बन गए हैं, जिनके रुपये सूद पर चलने की चर्चा चल रही है। चेलों पर चरित्रहीनता के आरोप लग रहे हैं। जिससे नैष्ठिक ब्रह्मचर्य धारण करने वालों को सन्देह की निगाह से देखा जाने लगा है।

अब आर्यसमाज का कोई सर्वमान्य नेता नहीं रहा। आर्य जनता द्वारा योग्यता और सक्रियता के आधार पर नेता नहीं चुना जाता, जोड़-तोड़, लड़ाई-झगड़े के द्वारा जबरन नेता पद हथिया लिया जाता है। अतः आर्यसमाज सत्संग और स्वाध्याय के केन्द्र न रहकर झगड़ा-फसाद के केन्द्र बन गए हैं। वहाँ बैठे गैर आर्यसमाजी विचायें वाले मन्त्री/प्रधानों के साथ आर्यसमाज के सच्चे सदस्य कैसे काम कर सकते हैं। सो बहुत से लोग अब आर्यसमाज में जाना ही छोड़ चुके हैं।

आर्यसमाज में पुरोहित और संन्यासी के पद भी लांछित हो रहे हैं। पुरोहित तो मन्त्री प्रधानों के नौकर ही हो गए हैं, न कि मार्गदर्शक या परामर्शदाता। संन्यासियों में या तो चिकनी पगड़ी और कीमती घड़ियाँ बाँधे चमकते गेरुए वस्त्रों में सजे-धजे, चरित्रहीनता के आरोपी, सफल-असफल राजनीतिबाज मिलेंगे या फिर वेद और संस्कृत ज्ञान से शून्य भोजन भट्ट। उपदेशकों में अधिकांश तोता मैना के किस्से सुनाकर मनोरंजन करने वाले या जोकरी करने वाले भजनोपदेशक रह गए हैं। विद्वानों के तो दर्शन ही दुर्लभ हैं। यद्यपि विद्वानों की कोई कमी नहीं है पर वे या तो आर्यसमाज से अन्यत्र कार्यरत हैं या फिर स्वतन्त्र व्यवसायी।

आर्यसमाज के शिक्षा संस्थानों में गुरुकुलों और डी.ए.वी कॉलेजों का भी बुरा हाल है। गुरुकुलों में सांगोपांग वेद पढ़ने और विद्वान् तैयार करने की कहीं भी व्यवस्था नहीं है, कहीं भी महर्षि दयानन्द की पाठ विधि पूर्णतया लागू नहीं है। इनता ही नहीं अभी तक यह भी निश्चय नहीं हुआ कि पाठ विधि में महर्षि के ज्ञान-विज्ञान विषयक ग्रन्थ कौन-कौन से हैं। वहाँ न तो आर्यसमाज के अनुरूप चरित्र मिलता है और न व्यवहार। डी.ए.वी. तो पण्डित गुरुदत्त और लाला लाजपतराय के विचायें से बहुत दूर रायमूलराज के ही स्वप्नों को साकार कर रहे हैं। खानपान, फैशन, रहन-सहन सब में वहाँ के लोग कहीं से भी आर्य नहीं मिलते। हमारी शिक्षा संस्थाएँ आर्यसमाज के उद्देश्य को कथमपि पूरा नहीं करतीं।

आर्यसमाज को सबसे अधिक हानि प्रतिनिधि सभाओं के द्वारा हुई है। इन सभाओं ने आर्यसमाज के लिए करणीय कुछ भी नहीं किया। इसका कारण यह था कि जो भी नेता आए वे अधिकांश राजनीतिक लाभ लेने की नीयत से ही आए। इस कारण इन लोगों ने कभी आर्यसमाज का कार्यक्रम नहीं अपनाया, मात्र राजनैतिक लाभ देने वाले सम्मेलनों व आन्दोलनों में सबको उलझाए रखा और धन बटोर कर अपने स्वार्थ सिद्ध किए।

आर्यसमाज में दोहरे चरित्र के लोगों का वर्चस्व कोई नया नहीं है। हमें कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर की ६० वर्ष पूर्व लिखी पंक्तियाँ बताती हैं कि-

जिन्हें संसार में संसार का उपकार करना था।
जिन्हें दुनियाँ में वैदिक धर्म का प्रचार करना था।
अनाथों और अछूतों का जिन्हें उद्धार करना था।
जिन्हें इस देश और जाति का बेड़ा पार करना था।
उन्हें देखो तो बाहम बरसरे पैकार बैठे हैं।
वजूद अपना मिटाने के लिए तैयार बैठे हैं।
पदों की लालसा में रोज लड़ते और लड़ाते हैं।
अदाएँ शासकों की हैं, मगर सेवक कहाते हैं।
यही लीडर रहे तो हो चुका परचार वेदों का।
इन्हें तो खून करना है, दयानन्द की उम्मीदों का...।

अब अगर कोई आर्यसमाज की अवनति का कारण पूछे तो यही कहना ठीक होगा कि-

काफिले गुजरें वहाँ से क्यों कर सलामत वाइज।
हो जहाँ पर रहनुमा और रहजन एक ही शख्स।।

अर्थात् जहाँ मार्गदर्शक और बटमार (राहगीरों को लूटने वाला) एक ही आदमी हो वहाँ से कोई काफिला सुरक्षित कैसे जा सकता है? तो फिर क्या किया जाए? **क्रमशः ....**

- आचार्य वेदप्रिय शास्त्री
सीताबाड़ी रोड, केलवाड़ा
जिला- बांरा (कोटा)

पंजाब की भाषा और लिपि की समस्या

- सरदार भगत सिंह

भारत की भाषा समस्या

{साहित्य हिन्दी भाषा, देवनागरी लिपि के महत्व पर लिखा गया सरदार भगत सिंह का ऐतिहासिक निबन्ध

१९२४ के दौरान पंजाब में भाषा-विवाद चल रहा था। पंजाबी भाषा की लिपि के प्रश्न पर उर्दू और हिन्दी के पक्षधरों में बहस जारी थी। भगत सिंह भी इस बहस पर अपने विचार बनाने लगे थे। पंजाब की भाषा और लिपि की समस्या पर यह लेख उन्होंने पंजाब हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आमन्त्रण पर लिखा था और अव्वल मानकर सम्मेलन ने इस पर ५०/- का ईनाम भी दिया था।

यह लेख सम्मेलन के प्रधानमन्त्री श्री भीमसेन विद्यालंकार ने सुरक्षित रखा और भगत सिंह के बलिदान के बाद २८ फरवरी, १९३३ के 'हिन्दी सन्देश' में प्रकाशित किया।}

"किसी समाज अथवा देश को पहचानने के लिए उस समाज अथवा देश के साहित्य से परिचित होने की परमावश्यकता होती है, क्योंकि समाज के प्राणों की चेतना उस समाज के साहित्य में भी प्रतिच्छवित हुआ करती है।"

उपरोक्त कथन की सत्यता का इतिहास साक्षी है। जिस देश के साहित्य का प्रवाह जिस ओर बहा, ठीक उसी ओर वह देश भी अग्रसर होता रहा। किसी भी जाति के उत्थान के लिए ऊँचे साहित्य की आवश्यकता हुआ करती है। ज्यों-ज्यों देश का साहित्य ऊँचा होता जाता है, त्यों-त्यों देश भी उन्नति करता जाता है। देशभक्त, चाहे वे निरे समाज सुधारक हों अथवा राजनीतिक नेता, सबसे अधिक ध्यान देश के साहित्य की ओर दिया करते हैं। यदि वे सामाजिक समस्याओं तथा परिस्थितियों के अनुसार नवीन साहित्य की सृष्टि न करें तो उनके सब प्रयत्न निष्फल हो जायें और उनके कार्य स्थायी न हो पायें।

शायद गैरीबाल्डी को इतनी जल्दी सेनाएँ न मिल पातीं, यदि मेजिनी ने ३० वर्ष देश में साहित्य तथा साहित्यिक जागृति पैदा करने में ही न लगा दिये होते। आयरलैण्ड के पुनरुत्थान के साथ गैलिक भाषा के पुनरुत्थान का प्रयत्न भी उसी वेग से किया गया। शासक लोग आयरिश लोगों को दबाये रखने के लिए उनकी भाषा का दमन करना इतना आवश्यक समझते थे कि गैलिक भाषा की एक-आध कविता रखने के कारण छोटे-छोटे बच्चों तक को दण्डित किया जाता था। रूसो, वाल्टेयर के साहित्य के बिना फ्रांस की राज्यक्रान्ति घटित न हो पाती। यदि टालस्टाय, कार्ल मार्क्स तथा मैक्सिम गोर्की इत्यादि ने नवीन साहित्य पैदा करने में वर्षों व्यतीत न कर दिये होते, तो रूस की क्रान्ति न हो पाती, साम्यवाद का प्रचार तथा व्यवहार तो दूर रहा।

यही दशा हम सामाजिक तथा धार्मिक सुधारकों में देख पाते हैं। कबीर के साहित्य के कारण उनके भावों का स्थायी प्रभाव दीख पड़ता है। आज तक उनकी मधुर तथा सरस कविताओं को सुनकर लोग मुग्ध हो जाते हैं।

ठीक यही बात गुरु नानकदेव जी के विषय में भी कही जा सकती है। सिक्ख गुरुओं ने अपने मत के प्रचार के साथ जब नवीन सम्प्रदाय स्थापित करना शुरू किया, उस समय उन्होंने नवीन साहित्य की आवश्यकता भी अनुभव की और इसी विचार से गुरु अंगददेव जी ने गुरुमुखी लिपि बनायी। शताब्दियों तक निरन्तर युद्ध और मुसलमानों के आक्रमणों के कारण पंजाब में साहित्य की कमी हो गयी थी। हिन्दी

भाषा का भी लोप-सा हो गया था। इस समय किसी भारतीय लिपि को ही अपनाने के लिए उन्होंने कश्मीरी लिपि को अपना लिया। तत्पश्चात गुरु अर्जुनदेव जी तथा भाई गुरुदास जी के प्रयत्न से आदिग्रन्थ का संकलन हुआ। अपनी लिपि तथा अपना साहित्य बनाकर अपने मत को स्थायी रूप देने में उन्होंने यह बहुत प्रभावशाली तथा उपयोगी क़दम उठाया था।

उसके बाद ज्यों-ज्यों परिस्थिति बदलती गयी, त्यों-त्यों साहित्य का प्रवाह भी बदलता गया। गुरुओं के निरन्तर बलिदानों तथा कष्ट-सहन से परिस्थिति बदलती गयी। जहाँ हम प्रथम गुरु के उपदेश में भक्ति तथा आत्मविस्मृति के भाव सुनते हैं और निम्नलिखित पद में कमाल आजिजी का भाव पाते हैं:

नानक नन्हे हो रहे, जैसी नन्हीं दूब।
और घास जरि जात है, दूब खूब की खूब।।

वहीं पर हम नवें गुरु श्री तेगबहादुर जी के उपदेश में पददलित लोगों की हमदर्दी तथा उनकी सहायता के भाव पाते हैं:

बाँहि जिन्हाँ दी पकड़िये,
सिर दीजिये बाँहि न छोड़िये।
गुरु तेगबहादुर बोलया,
धरती पै धर्म न छोड़िये।।

उनके बलिदान के बाद हम एकाएक गुरु गोविन्द सिह जी के उपदेश में क्षात्र धर्म का भाव पाते हैं। जब उन्होंने देखा कि अब केवल भक्ति-भाव से ही काम न चलेगा, तो उन्होंने चण्डी की पूजा भी प्रारम्भ की और भक्ति तथा क्षात्र धर्म का समावेश कर सिक्ख समुदाय को भक्तों तथा योद्धाओं का समूह बना दिया। उनकी कविता (साहित्य) में हम नवीन भाव देखते हैं।

वे लिखते हैं:

जे तोहि प्रेम खेलण का चाव,
सिर धर तली गली मोरी आव।
जे इत मारग पैर धरीजै,
सिर दीजै कांण न कीजै।।

और फिर-

सूरा सो पहिचानिये, जो लड़ै दीन के हेत।
पुर्ज़ा -पुर्ज़ा कट मरै, कभूँ न छाँड़ै खेत।।

और फिर एकाएक खड्ग की पूजा प्रारम्भ हो जाती है।

खग खण्ड विहण्ड,
खल दल खण्ड अति रन मण्ड प्रखण्ड।
भुज दण्ड अखण्ड,
तेज प्रचण्ड जोति अभण्ड भानुप्रभं।।

उन्हीं भावों को लेकर बाबा बन्दा आदि मुसलमानों के विरुद्ध निरन्तर युद्ध करते रहे, परन्तु उसके बाद हम देखते हैं कि जब सिक्ख सम्प्रदाय केवल अराजकों का एक समूह रह जाता है और जब वे ग़ैर-क़ानूनी (Outlaw) घोषित कर दिये जाते हैं, तब उन्हें निरन्तर जंगलों में ही रहना पड़ता है। अब इस समय नवीन साहित्य की सृष्टि नहीं हो सकी। उनमें नवीन भाव नहीं भरे जा सके। उनमें क्षात्र-वृत्ति थी, वीरत्व तथा बलिदान का भाव था और मुसलमान शासकों के विरुद्ध युद्ध करते रहने का भाव था, परन्तु उसके बाद क्या करना होगा, यह वे भली-भाँति नहीं समझे। तभी तो उन वीर योद्धाओं के समूह (मिसलें) आपस में भिड़ गये। यहीं पर सामयिक भावों की त्रुटि बुरी तरह अखरती है। यदि बाद में रणजीत सिह जैसा वीर योद्धा और चालाक शासक न निकल आता, तो सिक्खों को एकत्रित करने के लिए कोई उच्च आदर्श अथवा भाव शेष न रह गया था।

इन सबके साथ एक बात और भी ख़ास ध्यान देने योग्य है। संस्कृत का सारा साहित्य हिन्दू समाज को पुनर्जीवित न कर सका, इसीलिए सामयिक भाषा में नवीन साहित्य की सृष्टि की गयी। उस सामयिक भाव के साहित्य ने अपना जो प्रभाव दिखाया वही हम आज तक अनुभव करते हैं। एक अच्छे समझदार व्यक्ति के लिए क्लिष्ट संस्कृत के मन्त्र तथा पुरानी अरबी की आयतें इतनी प्रभावकारी नहीं हो सकतीं जितनी कि उसकी अपनी साधारण भाषा की साधारण बातें।

ऊपर पंजाबी भाषा तथा साहित्य के विकास का संक्षिप्त इतिहास लिखा गया है। अब हम वर्तमान अवस्था पर आते हैं। लगभग एक ही समय पर बंगाल में स्वामी विवेकानन्द तथा पंजाब में स्वामी रामतीर्थ पैदा हुए, दोनों एक ही ढर्रे के महापुरुष थे। दोनों विदेशों में भारतीय तत्त्वज्ञान की धाक जमाकर स्वयं भी जगत-प्रसिद्ध हो गये, परन्तु स्वामी विवेकानन्द का मिशन बंगाल में एक स्थायी संस्था बन गया, पर पंजाब में स्वामी रामतीर्थ का स्मारक तक नहीं दीख पड़ता। उन दोनों के विचारों में भारी अन्तर रहने पर भी तह में हम एक गहरी समता देखते हैं। जहाँ स्वामी विवेकानन्द कर्मयोग का प्रचार कर रहे थे, वहाँ स्वामी रामतीर्थ भी मस्तानावार गाया करते थे:

हम रूखे टुकड़े खायेंगे, भारत पर वारे जायेंगे।
हम सूखे चने चबायेंगे, भारत की बात बनायेंगे।
हम नंगे उमर बितायेंगे, भारत पर जान मिटायेंगे।

वे कई बार अमेरिका में अस्त होते सूर्य को देखकर आँसू बहाते हुए कहा करते थे- "तुम अब मेरे प्यारे भारत में उदय होने जा रहे हो। मेरे इन आँसुओं को भारत के सलिल सुन्दर खेतों में ओस की बूँदों के रूप में रख देना।" इतना महान् देश तथा ईश्वर-भक्त हमारे प्रान्त में पैदा हुआ हो, परन्तु उसका स्मारक तक न दीख पड़े, इसका कारण साहित्यिक फिसड्डीपन के अतिरिक्त क्या हो सकता है?

यह बात हम पद-पद पर अनुभव करते हैं। बंगाल के

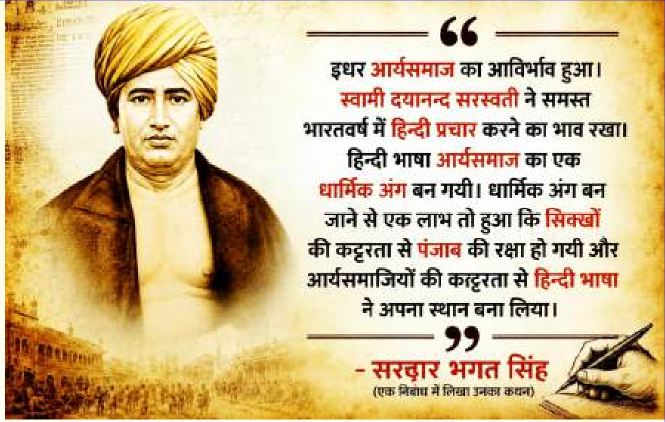

महापुरुष श्री देवेन्द्र ठाकुर तथा श्री केशवचन्द्र सेन की टक्कर के पंजाब में भी कई महापुरुष हुए हैं, परन्तु उनकी वह क़द्र नहीं और मरने के बाद वे जल्द ही भुला दिये गये, जैसे ज्ञान सिह जी इत्यादि। इन सबकी तह में हम देखते हैं कि एक ही मुख्य कारण है, और वह है साहित्यिक रुचि-जागृति का सर्वथा अभाव।

यह तो निश्चय ही है कि साहित्य के बिना कोई देश अथवा जाति उन्नति नहीं कर सकती, परन्तु साहित्य के लिए सबसे पहले भाषा की आवश्यकता होती है और पंजाब में वह नहीं है। इतने दिनों से यह त्रुटि अनुभव करते रहने पर भी अभी तक भाषा का कोई निर्णय न हो पाया। उसका मुख्य कारण है हमारे प्रान्त के दुर्भाग्य से भाषा को मजहबी समस्या बना देना। अन्य प्रान्तों में हम देखते हैं कि मुसलमानों में प्रान्तीय भाषा को खूब अपना लिया है। बंगाल के साहित्य-क्षेत्र में कवि नज़र-उल-इस्लाम एक चमकते सितारे हैं। हिन्दी कवियों में लतीफ़ हुसैन 'नटवर' उल्लेखनीय हैं। इसी तरह गुजरात में भी हैं, परन्तु दुर्भाग्य है पंजाब का। यहाँ पर मुसलमानों का प्रश्न तो अलग रहा, हिन्दू-सिक्ख भी इस बात पर न मिल सके।

पंजाब की भाषा अन्य प्रान्तों की तरह पंजाबी ही होनी चाहिए थी, फिर क्यों नहीं हुई, यह प्रश्न अनायास ही उठता है, परन्तु यहाँ के मुसलमानों ने उर्दू को अपनाया। मुसलमानों में भारतीयता का सर्वथा अभाव है, इसीलिए वे समस्त भारत में भारतीयता का महत्त्व न समझकर अरबी लिपि तथा फारसी भाषा का प्रचार करना चाहते हैं। समस्त भारत की एक भाषा और वह भी हिन्दी होने का महत्त्व उनकी समझ में नहीं आता। इसलिए वे तो अपनी उर्दू की रट लगाते रहे और एक ओर बैठ गये।

फिर सिक्खों की बारी आयी। उनका सारा साहित्य गुरुमुखी लिपि में है। भाषा में अच्छी-ख़ासी हिन्दी है, परन्तु मुख्य पंजाबी भाषा है। इसलिए सिक्खों ने गुरुमुखी लिपि में लिखी जाने वाली पंजाबी भाषा को ही अपना लिया। वे उसे किसी तरह छोड़ न सकते थे। वे उसे मज़हबी भाषा बनाकर उससे चिपट गये।

'इधर आर्यसमाज का आविर्भाव हुआ। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समस्त भारतवर्ष में हिन्दी प्रचार करने का भाव रखा। हिन्दी भाषा आर्यसमाज का एक धार्मिक अंग बन गयी। धार्मिक अंग बन जाने से एक लाभ तो हुआ कि सिक्खों की कट्टरता से पंजाब की रक्षा हो गयी और आर्यसमाजियों की कट्टरता से हिन्दी भाषा ने अपना स्थान बना लिया।

आर्यसमाज के प्रारम्भ के दिनों में सिक्खों तथा आर्यसमाजियों की धार्मिक सभाएँ एक ही स्थान पर होती थीं। तब उनमें कोई भिन्न भेदभाव न था, परन्तु पीछे 'सत्यार्थ प्रकाश' के किन्हीं दो-एक वाक्यों के कारण आपस में मनोमालिन्य बहुत बढ़ गया और एक-दूसरे से घृणा होने लगी। इसी प्रवाह में बहकर सिक्ख लोग हिन्दी भाषा को भी घृणा की दृष्टि से देखने लगे। औरों ने इसकी ओर किंचित भी ध्यान न दिया।

बाद में, कहते हैं कि आर्यसमाजी नेता महात्मा हंसराज जी ने लोगों से कुछ परामर्श किया था कि यदि वह हिन्दी लिपि को अपना लें, तो हिन्दी लिपि में लिखी जाने वाली पंजाबी भाषा यूनिवर्सिटी में मंजूर करवा लेंगे, परन्तु दुर्भाग्यवश वे लोग संकीर्णता के कारण और साहित्यिक जागृति के न रहने के कारण इस बात के महत्त्व को समझ ही न सके और वैसा न हो सका। ख़ैर! तो इस समय पंजाब में तीन मत हैं। पहला मुसलमानों का उर्दू सम्बन्धी कट्टर पक्षपात, दूसरा आर्यसमाजियों तथा कुछ हिन्दुओं का हिन्दी सम्बन्धी, तीसरा पंजाबी का।

इस समय हम एक-एक भाषा के सम्बन्ध में कुछ विचार करें, तो अनुचित न होगा। सबसे पहले हम मुसलमानों का विचार रखेंगे। वे उर्दू के कट्टर पक्षपाती हैं। इस समय पंजाब में इसी भाषा का ज़ोर भी है। कोर्ट की भाषा भी यही है, और फिर मुसलमान सज्जनों का कहना यह है कि उर्दू लिपि में ज़्यादा बात थोड़े स्थान में लिखी जा सकती है। यह सब ठीक है, परन्तु हमारे सामने इस समय सबसे मुख्य प्रश्न भारत को एक राष्ट्र बनाना है। एक राष्ट्र बनाने के लिए एक भाषा

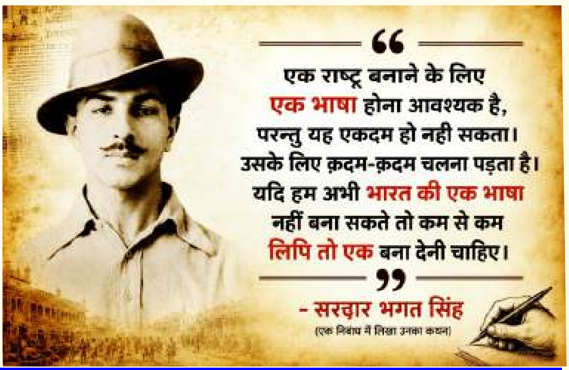

होना आवश्यक है, परन्तु यह एकदम हो नहीं सकता। उसके लिए क़दम-क़दम चलना पड़ता है। यदि हम अभी भारत की एक भाषा नहीं बना सकते तो कम से कम लिपि तो एक बना देनी चाहिए। उर्दू लिपि तो सर्वांगसम्पूर्ण नहीं कहला सकती, और फिर सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसका आधार फारसी भाषा पर है। उर्दू कवियों की उड़ान, चाहे वे हिन्दी (भारतीय) ही क्यों न हों, ईरान के साकी और अरब की खजूरों को जा पहुँचती है। काजी नज़र-उल-इस्लाम की कविता में तो धूरजटी, विश्वामित्र और दुर्वासा की चर्चा बार-बार है, परन्तु हमारे पंजाबी हिन्दी-उर्दू कवि उस ओर ध्यान तक भी न दे सके। क्या यह दुख की बात नहीं? इसका मुख्य कारण भारतीयता और भारतीय साहित्य से उनकी अनभिज्ञता है। उनमें भारतीयता आ ही नहीं पाती, तो फिर उनके रचित साहित्य से हम कहाँ तक भारतीय बन सकते हैं? केवल उर्दू पढ़ने वाले विद्यार्थी भारत के पुरातन साहित्य का ज्ञान नहीं हासिल कर सकते। यह नहीं कि उर्दू जैसी साहित्यिक भाषा में उन ग्रन्थों का अनुवाद नहीं हो सकता, परन्तु उसमें ठीक वैसा ही अनुवाद हो सकता है, जैसाकि एक ईरानी को भारतीय साहित्य सम्बन्धी ज्ञानोपार्जन के लिए आवश्यक हो।

हम अपने उपरोक्त कथन के समर्थन में केवल इतना ही कहेंगे कि जब साधारण आर्य और स्वराज्य आदि शब्दों को आर्या और स्वराजिया लिखा और पढ़ा जाता है तो गूढ़ तत्त्वज्ञान सम्बन्धी विषयों की चर्चा ही क्या? अभी उस दिन श्री लाला हरदयाल जी एम-ए. की उर्दू पुस्तक 'क़ौमें किस तरह ज़िन्दा रह सकती हैं?' का अनुवाद करते हुए सरकारी अनुवादक ने ऋषि नचिकेता को उर्दू में लिखा होने से नीची कुतिया समझकर 'ए बिच ऑफ़ लो ओरिजिन' अनुवाद किया था। इसमें न तो लाला हरदयाल जी का अपराध था, न अनुवादक महोदय का। इसमें क़सूर था उर्दू लिपि का और उर्दू भाषा की हिन्दी भाषा तथा साहित्य से विभिन्नता का।

शेष भारत में भारतीय भाषाएँ और लिपियाँ प्रचलित हैं। ऐसी अवस्था में पंजाब में उर्दू का प्रचार कर क्या हम भारत से एकदम अलग-थलग हो जावें? नहीं। और फिर सबसे बड़ी बात तो यह है कि उर्दू के कट्टर पक्षपाती मुसलमान लेखकों की उर्दू में फारसी का ही आधिक्य रहता है। 'ज़मींदार' और 'सियासत' आदि मुसलमान-समाचारपत्रों में तो अरबी का ज़ोर रहता है, जिसे एक साधारण व्यक्ति समझ भी नहीं सकता। ऐसी दशा में उसका प्रचार कैसे किया जा सकता है? हम तो चाहते हैं कि मुसलमान भाई भी अपने मज़हब पर पक्के रहते हुए ठीक वैसे ही भारतीय बन जायें जैसेकि कमाल टर्क (तुर्क) हैं। भारतोद्धार तभी हो सकेगा। हमें भाषा आदि के प्रश्नों को मार्मिक समस्या न बनाकर खूब विशाल दृष्टिकोण से देखना चाहिए।

इसके बाद हम हिन्दी-पंजाबी भाषाओं की समस्या पर विचार करेंगे। बहुत-से आदर्शवादी सज्जन समस्त जगत को एक राष्ट्र, विश्व राष्ट्र बना हुआ देखना चाहते हैं। यह आदर्श बहुत सुन्दर है। हमको भी इसी आदर्श को सामने रखना चाहिए। उस पर पूर्णतया आज व्यवहार नहीं किया जा सकता, परन्तु हमारा हर एक क़दम, हमारा हर एक कार्य इस संसार की समस्त जातियों, देशों तथा राष्ट्रों को एक सुदृढ़ सूत्र में बाँधकर सुख-वृद्धि करने के विचार से उठना चाहिए। उससे पहले हमको अपने देश में यही आदर्श क़ायम करना होगा। समस्त देश में एक भाषा, एक लिपि, एक साहित्य, एक आदर्श और एक राष्ट्र बनाना पड़ेगा, परन्तु समस्त एकताओं से पहले एक भाषा का होना ज़रूरी है, ताकि हम एक-दूसरे को भली-भाँति समझ सकें। एक पंजाबी और एक मद्रासी इकट्ठा बैठकर केवल एक-दूसरे का मुँह ही न ताका करें, बल्कि एक-दूसरे के विचार तथा भाव जानने का प्रयत्न करें, परन्तु यह परायी भाषा अंग्रेज़ी में नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान की अपनी भाषा हिन्दी में। यह आदर्श भी, पूरा होते-होते अभी कई वर्ष लगेंगे। उसके प्रयत्न में हमें सबसे पहले साहित्यिक जागृति पैदा करनी चाहिए। केवल गिनती के कुछेक व्यक्तियों में नहीं, बल्कि सर्वसाधारण में। सर्वसाधारण में साहित्यिक जागृति पैदा करने के लिए उनकी अपनी ही भाषा आवश्यक है। इसी तर्क के आधार पर हम कहते हैं कि पंजाब में पंजाबी भाषा ही आपको सफल बना सकती है।

अभी तक पंजाबी साहित्यिक भाषा नहीं बन सकी है और समस्त पंजाब की एक भाषा भी वह नहीं है। गुरुमुखी लिपि में लिखी जाने वाली मध्य पंजाब की बोलचाल की भाषा को ही इस समय तक पंजाबी कहा जाता है। वह न तो अभी तक विशेष रूप से प्रचलित ही हो पायी है और न ही साहित्यिक तथा वैज्ञानिक ही बन पायी है। उसकी ओर पहले तो किसी ने ध्यान ही नहीं दिया, परन्तु अब जो सज्जन उस ओर ध्यान भी दे रहे हैं उन्हें लिपि की अपूर्णता बेतरह अखरती है। संयुक्त अक्षरों का अभाव और हलन्त न लिख सकने आदि के कारण उसमें भी ठीक-ठीक सब शब्द नहीं लिखे जा सकते, और तो और, पूर्ण शब्द भी नहीं लिखा जा सकता। यह लिपि तो उर्दू से भी अधिक अपूर्ण है और जब हमारे सामने वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर निर्भर सर्वांगसम्पूर्ण हिन्दी लिपि विद्यमान है, फिर उसे अपनाने में हिचक क्या? गुरुमुखी लिपि तो हिन्दी अक्षरों का ही बिगड़ा हुआ रूप है। आरम्भ में ही उसका उ का ੳ, अ का ਅ बना हुआ है और

म ट ठ आदि तो वे ही अक्षर हैं। सब नियम मिलते हैं फिर एकदम उसे ही अपना लेने से कितना लाभ हो जायेगा? सर्वांगसम्पूर्ण लिपि को अपनाते ही पंजाबी भाषा उन्नति करना शुरू कर देगी। और उसके प्रचार में कठिनाई ही क्या है? पंजाब की हिन्दू स्त्रियाँ इसी लिपि से परिचित हैं। डी.ए.वी. स्कूलों और सनातन धर्म स्कूलों में हिन्दी ही पढ़ाई जाती है। ऐसी दशा में कठिनाई ही क्या है? हिन्दी के पक्षपाती सज्जनों से हम कहेंगे कि निश्चय ही हिन्दी भाषा ही अन्त में समस्त भारत की एक भाषा बनेगी, परन्तु पहले से ही उसका प्रचार करने से बहुत सुविधा होगी। हिन्दी लिपि के अपनाने से ही पंजाबी हिन्दी की-सी बन जाती है। फिर तो कोई भेद ही नहीं रहेगा और इसकी ज़रूरत है, इसलिए कि सर्वसाधारण को शिक्षित किया जा सके और यह अपनी भाषा के अपने साहित्य से ही हो सकता है। पंजाबी की यह कविता देखिये-

ओ राहिया राहे जान्दया, सुन जा गल मेरी,
सिर ते पग तेरे वलैत दी, इहनूँ फूक मआतड़ा ला।।

और इसके मुक़ाबले में हिन्दी की बड़ी-बड़ी सुन्दर कविताएँ कुछ प्रभाव न कर सकेंगी, क्योंकि वह अभी सर्वसाधारण के हृदय के ठीक भीतर अपना स्थान नहीं बना सकी है। वह अभी कुछ बहुत परायी-सी दीख पड़ती है। कारण कि हिन्दी का आधार संस्कृत है। पंजाब उससे कोसों दूर हो चुका है। पंजाबी में फारसी ने अपना प्रभाव बहुत कुछ रखा है। यथा, चीज़ का जमा 'चीज़ें' न होकर फारसी की तरह 'चीज़ाँ' बन गया है। यह असूल अन्त तक कार्य करता दिखायी देता है। कहने का तात्पर्य यह है कि पंजाबी के निकट होने पर भी हिन्दी अभी पंजाबी-हृदय से काफ़ी दूर है। हाँ, पंजाबी भाषा के हिन्दी लिपि में लिखे जाने पर और उसके साहित्य बनाने के प्रयत्न में निश्चय ही वह हिन्दी के निकटतर आ जायेगी।

- प्रो. सुभाष शर्मा
संयोजक, साहित्य संध्या, मेलबोर्न

डॉ. गजराज सिंह आर्य बने जिला वेद-प्रचार समिति के अध्यक्ष

आर्य समाज सेक्टर-१६ फरीदाबाद के प्रांगण में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी और स्वामी आदित्यवेश जी के सान्निध्य में हुई बैठक में उनके आशीर्वाद से जिला वेद-प्रचार समिति; फरीदाबाद का गठन हुआ। जिसमें जिला प्रधान- डाक्टर गजराज सिंह आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान- विमला ग्रोवर, उपप्रधान- जितेन्द्र सिंह आर्य, मंत्री- सुशील शास्त्री तथा कोषाध्यक्ष- नरेश अग्रवाल को सर्वसम्मति से करतल ध्वनि के बीच मनोनीत किया गया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वेद हमारी संस्कृति की आत्मा है। इसके प्रचार-प्रसार के लिए कर्मठता, नियमितता, समरसता और मेलजोल की भावना अति आवश्यक है।

इस प्रकार के गुण मुझे डॉक्टर गजराज सिंह आर्य में दिखाई देते हैं और उनकी टीम इस वेद-प्रचार कार्य को करने में सफल रहेगी।

डाक्टर गजराज सिंह आर्य ने स्वामी जी का धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ आश्वासन दिया कि वे अपनी टीम के साथ वेद-प्रचार में पूरे जी-जान से कार्य करेंगे।

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन-चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन-चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण: AC. No.: 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

कला युक्त जीवन– चन्द्रमा में १६ कलाएँ होती हैं, प्रत्येक कला मनोहारी है, यह उसको और अधिक महत्व प्रदान करती हैं, इसी प्रकार मानव जीवन में भी कला, ज्ञान का विशेष महत्व है। गुणों से, कला से विहीन व्यक्ति पशुवत् होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को कला प्रिय होना चाहिए। जीवन में विभिन्न प्रकार की विद्या का ज्ञान रखने वाले मनुष्य का ही समाज में मान-सम्मान होता है।

समान भाव का गुण– सूर्य-चन्द्र में समरूपता का व्यवहार- सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश बिना भेदभाव के सबको समान रूप से प्राप्त होता है। वैसे ही विद्वान् पुरूष किसी के प्रति कटुता का भाव न रखकर सबके साथ एक समान व्यवहार कर यथायोग्य सबको स्थान देते हैं।

यह भी ध्यान रखना चाहिए कि विश्व मानव समूह की सबसे बड़ी व मनुष्य सबसे पहली कड़ी है। विश्व समूह के सदस्य एक ही समाज के अंग होते हैं समाज अनेक मानवीय इकाईयों का संयुक्त रूप है। प्रत्येक मनुष्य इस समाज रूपी परिवार का सदस्य है। जिस प्रकार परिवार का प्रत्येक सदस्य परिवार की उन्नति कुशलता चाहता है तभी परिवार संगठित व सुखी रह सकता है तथा परिवार के जब सभी सदस्य सुखी हों तो परिवार सुखी और कुछ सदस्य दुःखी हों तो परिवार दुःखी होता है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को प्रत्येक के लिये समभाव रखना आवश्यक है। तभी व्यक्ति स्वयं और जिस समाज के मध्य में रहता है, जिसके सम्पर्क में उसका जीवन व्यतीत होता है, वह भी सुखी रह सकें।

मनुष्य के लिए उचित है कि केवल अपनी उन्नति से ही उसे सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए किन्तु दूसरों की उन्नति के लिये भी प्रयत्नशील होना चाहिए।

उपरोक्त वेद मन्त्र के माध्यम से हमें सूर्य और चन्द्रमा का अनुसरण करने का उपदेश मिला जिनका अनुसरण कर उन्नत जीवन बना सकते हैं। और जीवन की सफलता तो तभी है,"जब हम आए जगत् में, जगत् हँसा हम रोए। ऐसी करनी कर चलो, हम हँसें जग रोए।।"

शुभ कर्मों से जीवन जीने वाला शरीर त्यागते समय घबराता नहीं, पछताता नहीं, किए कर्मों से दुःखी नहीं होता अपितु अपने किए हुए कार्यों से उसे प्रसन्नता प्राप्त होती है और जब ऐसे व्यक्ति समाज से चले जाते हैं, तो उनके न रहने का दुःख समाज में सदा

बना रहता है।

इस प्रकार मनुष्य जीवन के लिये अभी तक हमने जीवन का एक पक्ष समझा कि, हमें एक श्रेष्ठ मानव बनने के लिये जीवन में क्या अपनाना चाहिए। किन्तु जीवन की सफलता के लिये हमें क्या नहीं करना चाहिए किस पथ पर नहीं चलना चाहिए यह भी बहुत महत्वपूर्ण है इसे भी हमें वेद मन्त्र के द्वारा समझाया गया है।

इस मन्त्र में छः प्रकार की चालों अर्थात् मार्गों या विचारों को मनुष्य के जीवन के लिए घातक हैं उन्हें राक्षस कहा है तथा निन्दनीय माना है। उन छः को मानव जीवन के लिए राक्षस माना है, इनसे रक्षा करने का उपदेश मन्त्र में दिया है। मन्त्र निर्देश देता है कि इन कुविचायें को कुचल देना चाहिए जैसे पत्थर से किसी वस्तु को कुचलकर नष्ट कर देते हैं।

ये क्या हैं? इन्हें इस प्रकार बताया गया है -

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम्।
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।।

- अथर्ववेद ८/४/२२

मन्त्र में बताया गया कि निम्न वर्णित पशु-पक्षियों की वृत्ति का अनुसरण करना मानव जीवन के पतन का कारण हो सकता है। क्योंकि इन सभी पशु-पक्षियों में दोष पाए जाते हैं जो मानव जीवन के लिए घातक हैं

इसलिए इन पशु-पक्षियों की वृत्ति मनुष्य में न आवे इससे दूर रहने का सन्देश उपरोक्त वेद मन्त्र में दिया गया है। ये वृत्तियाँ क्या हैं? इन पर विचार करते हैं।

पहला अवगुण उल्लू की चाल मत चलो उल्लू को जो पसन्द है उसे मनुष्य अपने जीवन में न अपनावे। उल्लू को अन्धेरा पसन्द है दिन में वह किसी एकान्त स्थान में छिपकर बैठा रहता है। प्रकाश से उसे जैसे नफरत है। प्रकाश जब तक रहता है उसकी कोई गतिविधि नहीं रहती, जैसे ही अन्धेरा होता है वह अपने स्थान से बाहर निकलकर सक्रिय हो जाता है। अन्धेरे में घूमकर ही वह अपना शिकार ढूँढ़कर उसको मार देता है उसे अन्धेरा ही पसन्द है। रात्रि का अन्धेरा अनेक पापों को आश्रय देता है दिन का प्रकाश गलत कार्यों के लिये या पापों के अनुरूप नहीं होता। इसलिए रात्रि में अधिकांश गलत कामों को अन्जाम मिलता है।

उल्लू की ही भाँति कुछ व्यक्ति ज्ञान रूपी प्रकाश से दूर रहकर अज्ञान के अन्धेरे को ही जीवन में अपनाते हैं। अज्ञानता के कारण परमात्मा के दिव्य ज्ञान, व सुखों तथा आनन्द से वंचित रहकर दुःखी संतप्त रहकर दुनिया से चले जाते हैं। इसके विपरीत जो ज्ञानमय जीवन जीते हैं वे इस सृष्टि और साधनों तथा जीवन का अमृतपान कर लेते हैं।

इसीलिए कहा **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'** हम अज्ञान रूपी अन्धेरे से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर चलें। अज्ञान रूपी अन्धेरे में ही भटकाव व ठोकर खाना सम्भव है जिसमें पतन ही पतन है।

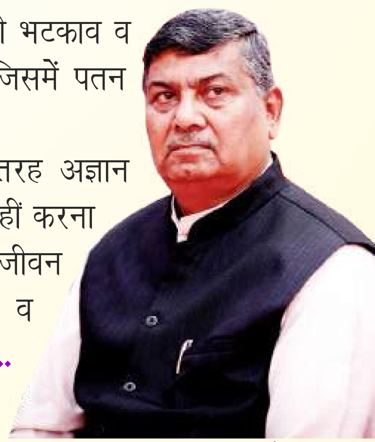

इसलिए हमें उल्लू की तरह अज्ञान रूपी अन्धेरे को पसन्द नहीं करना चाहिए, यह वृत्ति मनुष्य जीवन के लिए हानिकारक व अभिशाप है। **क्रमशः ......**

- प्रकाश आर्य
मन्त्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
प्रधान- आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य भारत

क्या महर्षि दयानन्द भांग का सेवन करते थे?

कुछ धूर्त लोग ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य को भाँग के नशे में लिखा गया कहते हैं। ऐसा वे ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य के हिन्दी अनुवाद में रही कमियों के आधार पर कहते हैं, क्योंकि ऋषि का भाष्य संस्कृत में है और वह उनकी समझ में नहीं आता और यदि आ जाये, तो वे द्वेषवश उसे समझना नहीं चाहते।

मैं यह बात स्पष्ट कर दूँ कि हिन्दी अनुवाद ऋषि दयानन्द के लेखकों का है, न कि ऋषि दयानन्द का और उसमें अनेक त्रुटियाँ भी रह गई हैं। इस पर भाष्य के प्रकाशकों तथा सभाओं के विद्वानों को शीघ्रातिशीघ्र विचार करके योग्य विद्वानों से संस्कृत भाष्य के अनुकूल निर्दोष अनुवाद वा व्याख्या कराने का प्रयास करना चाहिए। जो उसमें दोष ढूँढ़ते हैं, उन्हें मैं कहना चाहूँगा कि क्या वे किसी वेदमन्त्र का भाष्य कर भी सकते हैं? यदि भाष्य में त्रुटि मानते हैं, तब क्या वे उन-उन मन्त्रों का निर्दोष भाष्य कर सकते हैं? जब तक वे ऐसा नहीं कर सकते, तब तक उन्हें आरोप लगाने का कोई अधिकार नहीं है।

उधर यह भी विचारें कि ऋषि दयानन्द लगभग २१ वर्ष की अवस्था में सच्चे शिव की खोज में घर से निकलते हैं। मार्ग में अनेक साधुओं के सम्पर्क में आते हैं। वे किसी योग्य को गुरु चुनने का लक्ष्य लेकर पहाड़ों, जंगलों, मन्दिरों व मठों में भटकते हैं। उन्हें भाँग-गाँजे वाले नकली साधु भी मिले। उन्हें उस समय असली व नकली साधु की पहचान नहीं थी। किसी नकली साधु ने भाँग खाना सिखा दिया और उन्होंने खा ली। जब तक वे गुरुवर दण्डी स्वामी विरजानन्द जी सरस्वती के सान्निध्य में नहीं आये थे, तब तक उन्हें स्पष्ट मार्ग का बोध ही नहीं था। गुरुवर से विदा होने के पश्चात् और उनके सान्निध्य से पूर्व के उनके व्यक्तित्व में बहुत अन्तर है। केवल समानता है, तो कठोर ब्रह्मचर्य, वज्रतुल्य शरीर, प्रबल वैराग्य व सत्य की प्रबल जिज्ञासा की। उनका पूर्णत्व उनके सत्यार्थ प्रकाश और उससे भी अधिक उनकी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका एवं वेदभाष्य (केवल संस्कृत भाग) में ही मिलता है और उसी काल में उनका व्यक्तित्व पूर्ण दिखाई देता है।

ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में मादक पदार्थों के सेवन का कितना विरोध किया है, यह इन द्वेषी लोगों को दिखाई नहीं देता। ऋषि दयानन्द ने अज्ञानता में भूल की उसे भी अपनी आत्मकथा में दर्शा दिया, यह उनके आत्मा की पवित्रता का प्रतीक है, परन्तु इनके मन्दिर तो आज भी भाँग-गाँजा, अफीम आदि के अड्डे बने हुए हैं। ये मादक पदार्थों को भगवान् शिव

का प्रसाद कहकर आज भी ग्रहण कर रहे हैं।

कामाख्या आदि मन्दिरों में आज भी निरीह पशुओं का खून बहाया जाता है, वह इन धूर्तों का दिखाई नहीं देता। जबकि आर्य समाज के मन्दिरों में कहीं भी किसी भी प्रकार का कोई नशा नहीं होता और न ही किसी अभक्ष्य पदार्थों का सेवन होता है।

वास्तविकता यह है कि ऋषि दयानन्द पर अँगुली उठाने वाले लोग चरित्र, विद्या आदि किसी भी गुण की दृष्टि से उन पर टिप्पणी करने के अधिकारी नहीं हैं। यदि उनके पास प्रतिभा व ईमानदारी है, तो उन्हें ऋषिकृत ग्रन्थों व जीवनी को निष्पक्षभाव से पढ़ना चाहिए। अन्यथा सूर्य पर थूकने का परिणाम क्या होता है, वे स्वयं जानते हैं? दुर्बल चरित्र, ईर्ष्यालु, द्वेषी, छली-कपटी व अविद्याग्रस्त लोगों के द्वारा उस महान् आत्मा, ऋषि परम्परा के संवाहक को भंगेड़ी कहना पाप की पराकाष्ठा है।

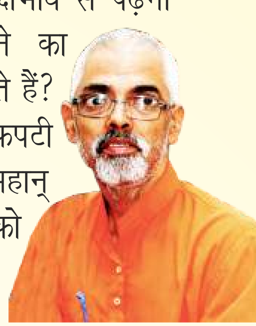

- आचार्य अग्निव्रत

प्रमुख, वैदिक एवं आधुनिक भौतिकी शोध संस्थान

(श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास द्वारा संचालित)

दान की अपील

सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली नवलखा महल से NMCC के रूप में सत्यार्थ शिक्षाओं को जिस अद्भुत प्रकार से प्रसारित किया जा रहा है और सहस्रों लोग आकर्षित हो इसका लाभ ले रहे हैं जिस कारण से यह स्थल अब विख्यात होता जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि इस यज्ञ में अपनी छोटी–बड़ी आहुति अवश्य देने की कृपा करें। इस हेतु साथ में दिए यूपीआई कोड का भी आप इस्तेमाल कर सकते हैं। बस एक अनुरोध है कि अगर आप अर्थ सहयोग प्रदान करें तो चलभाष 9314235101, 7976271159 अथवा 9314535379 पर सूचित अवश्य करें।

G Pay

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

BHIM UPI

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है-

सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास | **भवानीदास आर्य,** मंत्री-न्यास | **डॉ. अमृत लाल तापड़िया,** संयुक्तमंत्री-न्यास

कहानी दयानन्द की

कथा सरित

गतांक से आगे .....

स्वामी दयानन्द के प्रभाव का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि उस समय के बड़े से बड़े पण्डित, बड़े से बड़े अधिकारीगण स्वामी जी के व्याख्यान सुनने आया करते थे। यहाँ तक कि प्रसिद्ध पाश्चात्य संस्कृतज्ञ प्रोफेसर मोनियर विलियम्स भी स्वामी जी के व्याख्यान में उपस्थित हुए और अत्यन्त प्रभावित हुए। व्याख्यान के पश्चात् प्रोफेसर मोनियर विलियम्स और स्वामी जी की बहुत देर तक संस्कृत में बातचीत होती रही। विलियम्स ने स्वामी जी के अगाध ज्ञान की बहुत प्रशंसा की।

मुम्बई में स्वामी जी के भाषणों से पौराणिक जगत् की मूलभूत मान्यताएँ हिल चुकी थीं। लोग मूर्तिपूजा को छोड़ देंगे ऐसा उन्हें आसन्न लगता था। अतः उनकी अनन्य इच्छा रहती थी कि कोई पण्डित आए और स्वामी जी को शास्त्रार्थ में हराए। शान्तिपुर नदिया के एक ज्योतिषी पण्डित रामलाल थे, जो मुम्बई के मारवाड़ी समाज में बड़े विद्वान् माने जाते थे। इन लोगों ने उनसे निवेदन किया कि वह स्वामी दयानन्द से शास्त्रार्थ करें। पण्डित रामलाल स्वामी जी की अगाध विद्या के विषय में जानते थे, परन्तु मजबूरी में उनको शास्त्रार्थ के लिए हाँ बोलना पड़ा।

प्रश्न वही था कि वेद में मूर्तिपूजा की ओर संकेत करने वाले एक ही वेद मंत्र को आप बता दीजिए। पण्डित जी ने मनुस्मृति, पुराण आदि से कई उदाहरण दिए परन्तु वेद से एक भी नहीं। इस पर मध्यस्थ को भी कहना पड़ा कि इस प्रकार से शास्त्रार्थ कैसे होगा? स्वामी जी पूछ कुछ और रहे हैं, आप उसका उत्तर कुछ और दे रहे हो।

इस सब का परिणाम यह हुआ कि श्रोताओं की समझ में यह बात आई कि वेद में मूर्तिपूजा की कोई आज्ञा नहीं है। इस शास्त्रार्थ के प्रभाव को हम निम्न उदाहरण में देख सकते हैं।

४ अप्रैल सन् १८७६ को जीवन दयाल नेरका दयाल ने एक विज्ञापन दिया जिसमें लिखा कि १८ मास से पण्डित दयानन्द सरस्वती मुम्बई पधारे हैं और वे बराबर मूर्तिपूजा का खण्डन कर रहे हैं। बड़े-बड़े पण्डित मूर्तिपूजा का समर्थन वेद से सिद्ध नहीं कर सके। अतः मैं यह निश्चय करके कि मूर्तिपूजा वेदानुमोदित नहीं है, आर्य समाज का सभासद हुआ हूँ। फिर भी यदि कोई पण्डित कोई वेद मंत्र ऐसा पाते हैं और सत्य अर्थ सहित जिससे मूर्तिपूजा सिद्ध होती हो, मेरे पास भेज देगा तो मैं उसे १२५ रुपया दक्षिणा दूँगा।

स्वामी दयानन्द की कहानी में जगह-जगह पाठकों ने देखा होगा कि उनको उनके सिद्धान्तों से हिलाने के लिए साम-दाम-दण्ड-भेद सभी का प्रयोग किया गया। प्रलोभनों की बात करें तो शायद ही कोई ऐसा स्थल होगा, जहाँ उन्हें अपने मन्तव्य से हटाने के लिए प्रलोभन की बात न कही गई होगी। मुम्बई के प्रसिद्ध सेठ गोकुलदास तेजपाल जो वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे, उन्होंने भी श्री महाराज को कहा कि आप अगर मूर्तिपूजा का खण्डन छोड़ दें तो जितने भी भाटिया समाज के लोग हैं उनको आपका अनुयायी बना दूँगा। परन्तु सदैव की भाँति श्री महाराज को कोई प्रलोभन सत्य सिद्धान्तों को छोड़ने के लिए मजबूर नहीं कर सका।

स्वामी जी अप्रैल १९७६ में इन्दौर पहुँचे। इन्दौर के महाराजा तुकोजीराव जी कट्टर शिव भक्त थे परन्तु स्वामी जी की विद्वता के कारण उनका बहुत आदर करते थे। स्वामी जी ने तुकोजीराव को राजनीति के कुछ सिद्धान्त भी लिख करके दिए।

स्वामी जी यहाँ से फर्रुखाबाद पहुँचे। जैसा कि पाठक जानते हैं स्वामी जी महाराज ने अनेक पाठशालाएँ स्थापित की थीं और आशा की थी कि वह पाठशालाएँ और उनको चलाने वाले लोग उनके बताए पाठ्यक्रम का अनुसरण करेंगे और वेद को सर्वोपरि मानते हुए कार्यशैली स्थापित करेंगे। परन्तु फर्रुखाबाद की पाठशाला के भी हालात ठीक नहीं थे। अध्यापक भी अपने पुराने चले आ रहे विचारों में परिवर्तन नहीं कर पाते थे तो फिर विद्यार्थियों की तो बात ही क्या?

स्वामी जी ने इस पाठशाला का प्रधानाध्यापक अपने गुरु भाई पण्डित उदय प्रकाश को नियत किया था। वे स्वयं

पौराणिक विचारों के थे इसलिए शैवमत का मण्डन करते रहते थे। इस प्रकार से पाठशाला जिस उद्देश्य के निमित्त स्थापित की गई थी वह उद्देश्य ही पूरा नहीं हो रहा था, अतः पाठशाला तोड़ दी गई। जो धन पाठशाला के नाम जमा था वह दानियों और संचालकों की अनुमति से वेदभाष्य की सहायता में दे दिया गया। यहीं पर पण्डित ज्वालादत्त पढ़ाया करते थे। स्वामी जी को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने कठिन संस्कृत भाषा में कविता लिखी और उसे स्वामी जी को सुनाया।

स्वामी जी ने स्पष्ट कहा- मैं मनुष्य हूँ, मेरी इस प्रकार की स्तुति करना कदापि उचित नहीं है और यह भी कहा तुम्हारी कविता कठिन और जटिल है। इससे दो बातें निकाल कर आती हैं कि एक तो स्वामी जी उन विरले लोगों में से थे जो चाहते थे कि उनकी प्रशंसा ना हो। अपनी प्रशंसा सुनकर के लोग फूले नहीं समाते, पर स्वामी जी के निकट यह अवांछित था। दूसरा यह कि अपने पाण्डित्य को स्थापित करने के लिए कठिन संस्कृत का प्रयोग करने को स्वामी जी बहुत उचित नहीं मानते थे। उनका उद्देश्य था कि सरल भाषा में जिसे लोग समझ सकें वह बोला जाए और लिखा जाए। और उन्होंने यही कहा, यही किया। यही कारण है कि स्वामी जी की संस्कृत जब वेदभाष्य में या अन्यत्र देखते हैं तो वह साधारण व्यक्ति भी किसी हद तक समझ लेता है।

पादरी से वार्त्ता

एक पादरी से वार्तालाप करते हुए स्वामी जी ने पूछा कि आपके मत में मोक्ष का क्या उपाय है? पादरी ने उत्तर दिया कि मनुष्य ईसा पर विश्वास करके ही मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इस पर स्वामी जी ने कहा मोक्ष चाहते हो तो सत्य वेदों के धर्म में जिस ईश्वर का वर्णन है उसका अवलम्बन करना होगा। अगर किसी ने मृतपुरुष को जला दिया, इसी से, उसके सान्निध्य को मोक्ष मानोगे तो फिर शुक्राचार्य ने संजीवनी विद्या से बहुत से मृतपुरुषों को जलाया था तो क्या उनको ईश्वर का अवतार मानोगे? और उत्तम उपदेश देने से अगर यह मानते हो कि ईसा परित्राता हुआ तो फिर महात्मा कृष्ण ने तो गीता के रूप में बहुत उत्तम उपदेश दिया था। बाइबल की अपेक्षा गीता में अधिक उत्तम उपदेश है तो फिर श्री कृष्ण परित्राता हुए। पादरी साहब इन बातों का कोई उत्तर नहीं दे सके। मौन होकर वहाँ से चले गए।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

आजीवन सत्यार्थ मित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु.51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

राष्ट्र मन्दिर नवलखा महल में उमड़ा देशप्रेम का ज्वार

80वें स्वतंत्रता दिवस पर तिरंगा रैली, अखण्ड वन्दे मातरम् गायन और राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत कार्यक्रम 1500 सौ से ज्यादा दर्शकों ने देखे प्रेरणादायी प्रकल्प

स्वतंत्रता दिवस की ८०वीं वर्षगाँठ पर राष्ट्र मन्दिर, नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र, गुलाब बाग, उदयपुर में देशभक्ति और राष्ट्रप्रेम का अद्भुत वातावरण देखने को मिला। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर केन्द्र में आयोजित विविध कार्यक्रमों में बुजुर्गों से लेकर युवाओं, किशोरों और बच्चों तक ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पूरे दिन नवलखा महल परिसर राष्ट्रभक्ति के नारों, तिरंगे और देशप्रेम की भावनाओं से सराबोर रहा।

कार्यक्रम का शुभारम्भ न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य के नेतृत्व में गुलाब बाग के मुख्य द्वार से नवलखा महल तक निकाली गई भव्य तिरंगा रैली से हुआ। हाथों में तिरंगा लिए बड़ी संख्या में लोगों ने 'भारत माता की जय' और 'वन्दे मातरम्' के जयघोष के साथ रैली में भाग लिया। इसके पश्चात् वन्दे मातरम् के १५० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में अखण्ड वन्दे मातरम् गायन किया गया। गायन के पश्चात् न्यास अध्यक्ष अशोक आर्य ने राष्ट्रध्वज का ध्वजारोहण किया तथा राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का औपचारिक शुभारम्भ हुआ।

मातंगिनी हाजरा और कनकलता बरुआ का उदाहरण देकर युवाओं को दिया सन्देश

अपने सम्बोधन में अशोक आर्य ने वन्दे मातरम् के राष्ट्रीय आन्दोलन में रहे ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि एक गीत किस प्रकार स्वतंत्रता आन्दोलन की चेतना का केन्द्रीय स्वर बन गया, इसका उदाहरण वन्दे मातरम् है। उन्होंने कहा कि आज की पीढ़ी को यह समझना होगा कि भारत की स्वतंत्रता सहज रूप से प्राप्त नहीं हुई, बल्कि इसके लिए असंख्य वीरों ने अपना सर्वस्व न्योछावर किया।

उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगनाओं मातंगिनी हाजरा और कनकलता बरुआ का उल्लेख करते हुए कहा कि एक ओर ७३ वर्षीय मातंगिनी हाजरा थीं और दूसरी ओर मात्र १७ वर्ष की कनकलता बरुआ। दोनों ने तिरंगा हाथ में लेकर अंग्रेजी शासन के विरुद्ध मार्च किया। पुलिस की गोलियों का सामना करते हुए भी उन्होंने तिरंगे को अपने हाथ से नीचे नहीं गिरने दिया। मातंगिनी हाजरा गोली लगने के बाद भी तिरंगा ऊँचा रखे रहीं और कनकलता बरुआ ने भी प्राणोत्सर्ग तक ध्वज को नहीं छोड़ा।

अशोक आर्य ने कहा कि इन वीरों का जज्बा हमें निरन्तर यह स्मरण कराता है कि आजादी बड़ी कीमत चुकाकर मिली है और स्वतंत्र भारत की स्वतंत्रता, एकता एवं गौरव की रक्षा करना अब हमारी जिम्मेदारी है। उन्होंने युवाओं से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को समझने और देश की सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने का आह्वान किया।

नवलखा महल बना राष्ट्रभक्ति और संस्कारों का जीवन्त केन्द्र

उन्होंने कहा कि नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र केवल दर्शनीय स्थल नहीं, बल्कि मानव निर्माण और राष्ट्र निर्माण की प्रेरणा देने वाला केन्द्र है। यहाँ भारतीय संस्कृति, वैदिक परम्परा, संस्कारों और महापुरुषों की जीवन-गाथाओं को विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से जीवन्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इसी कड़ी में प्रसिद्ध दानवीर महाशय राजीव गुलाटी के सहयोग से निर्मित सिलिकॉन म्यूजियम विशेष आकर्षण का

केन्द्र बना हुआ है। यहाँ देश के १८ महान् क्रान्तिकारियों की अत्यन्त जीवन्त प्रतिमाएँ दर्शकों को इतिहास के उस कालखण्ड में ले जाती हैं, जहाँ वे इन अमर बलिदानियों के त्याग, संघर्ष और राष्ट्रभक्ति को मानो प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं।

निःशुल्क प्रवेश पर उमड़े हजारों दर्शक

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्र मन्दिर नवलखा महल

सांस्कृतिक केन्द्र में प्रवेश पूर्णतः निःशुल्क रखा गया। प्रातः १० बजे से सायं ६ बजे तक १५०० से अधिक दर्शक यहाँ पहुँचे। विभिन्न प्रकल्पों का अवलोकन करने के बाद दर्शकों की प्रतिक्रियाएँ अत्यन्त उत्साहजनक रहीं। अनेक दर्शकों ने इसे अद्‌भुत, आश्चर्यजनक और प्रेरणादायक बताते हुए कहा कि प्रत्येक भारतीय को यहाँ एक बार अवश्य आना चाहिए।

बुजुर्ग, प्रौढ़, युवा, किशोर और बच्चे हर आयु वर्ग के लोगों के लिए केन्द्र में प्रेरणा के अनेक स्रोत मौजूद रहे।

'आजाद भारत थ्रू माय लेंस' में शिवानी शर्मा प्रथम

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर न्यास की ओर से 'आजादी थ्रू माय लेंस' फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में मुम्बई की शिवानी शर्मा ने प्रथम, जयपुर के अजय पारीख ने द्वितीय तथा उदयपुर के संजय धाकड़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इनको प्रमाण-पत्र और सत्यार्थ प्रकाश प्रेषित किया जा रहा है।

न्यास के मंत्री श्री भवानी दास आर्य ने पुरस्कार विजेताओं की घोषणा की। न्यास के कोषाध्यक्ष श्री नारायण मित्तल ने सभी प्रतिभागियों एवं आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर संविधान ज्ञान परीक्षा

इससे पूर्व स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर न्यास की ओर से श्रीमती दुर्गा गोरमात, दिव्येश सुथार एवं सिद्धम आर्य के नेतृत्व में गुलाब बाग भ्रमण करने वाले नर नारियों के मध्य संविधान विषयक परीक्षा का आयोजन किया गया। इसमें प्रतिभागियों से भारतीय संविधान और उससे सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर प्रश्न पूछकर उनके ज्ञान का परीक्षण किया गया। सभी विजेता प्रतिभागियों को न्यास की ओर से महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' पारितोषिक के रूप में भेंट किया गया।

युवाओं और कर्मचारियों ने सम्भाली व्यवस्थाएँ

समूचे कार्यक्रम की व्यवस्थाएँ न्यास के स्टाफ द्वारा व्यवस्थापक श्री भंवरलाल गर्ग एवं श्री नवनीत आर्य के नेतृत्व में तथा नवलखा महल के युवा प्रकोष्ठ की संयोजिका श्रीमती ऋचा पीयूष के नेतृत्व में सुव्यवस्थित रूप से की गईं। कार्यक्रम के दौरान आगंतुकों की सुविधा, प्रवेश, विभिन्न प्रकल्पों के दर्शन तथा अन्य व्यवस्थाओं को लेकर विशेष प्रबन्ध किए गए। सहयोगियों में श्री विनोद कुमार राठौर, श्री रविन्द्र राठौर, सुश्री सृष्टि राठौर, भास्कर मित्तल, मितिशा मित्तल, जयेश आर्य, सुभाष गुप्ता, करण मेनारिया, रेखा गमेती, यशवन्त मीणा, देवीलाल पारगी, लक्ष्मण खराड़ी, निरमा, विकास के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्वतंत्रता दिवस पर नवलखा महल में उमड़ा जनसैलाब इस बात का प्रमाण रहा कि जब इतिहास, संस्कृति, राष्ट्रभक्ति

और संस्कारों को जीवन्त रूप में समाज के सामने प्रस्तुत किया जाता है तो हर आयु वर्ग उससे जुड़ता है। राष्ट्र मन्दिर नवलखा महल ने स्वतंत्रता दिवस पर एक बार फिर 'राष्ट्र प्रथम' की भावना को जन-जन तक पहुँचाने का सशक्त सन्देश दिया।

– डॉ. अमृतलाल तापड़िया; संयुक्त मंत्री-न्यास

समाचार

नवलखा महल में स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित

पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती के त्याग, तपस्या, राष्ट्रभक्ति और आर्य समाज के प्रति समर्पण से प्रेरणा लेकर समाज एवं राष्ट्र के लिए कार्य करने का आह्वान आर्य समाज भीलवाड़ा के प्रधान एवं श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री विजय शर्मा ने किया।

वे रविवार २६ जुलाई २०२६ को गुलाब बाग स्थित ऐतिहासिक नवलखा महल में स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती की पुण्यतिथि पर आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पूर्वाश्रम में हनुमान प्रसाद चौधरी के नाम से प्रसिद्ध स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती खनन व्यवसाय से जुड़े हुए थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज के प्रति उनकी गहन आस्था ने उन्हें सांसारिक वैभव का त्याग कर अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज की सेवा में समर्पित करने की प्रेरणा दी। वे श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के संस्थापक एवं आजीवन अध्यक्ष रहे।

श्री विजय शर्मा ने कहा कि सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थल होने के कारण आर्यों के लिए यह स्थल अत्यन्त महत्वपूर्ण है। स्वतंत्रता के बाद नवलखा महल राजस्थान सरकार के आबकारी विभाग के गोदाम के रूप में प्रयुक्त होने लगा था। इसे आर्य समाज को वापस दिलाने के लिए

पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज ने निरन्तर प्रयास किए। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप वर्ष १९९२ में राजस्थान सरकार ने नवलखा महल को ९९ वर्ष की लीज पर आर्य समाज को सौंपा।

उस समय भवन अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था। इसके पुनरुद्धार की दिशा में स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती ने एक करोड़ रुपये की दानराशि देकर महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी इस दान-आहुति ने नवलखा महल के जीर्णोद्धार एवं विकास की आधारशिला रखी। ऐसे महामना दानी के जीवन से प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरणा लेनी चाहिए।

वैदिक राष्ट्रवाद ने जगाई राष्ट्रीय चेतना

इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में पधारे ओजस्वी संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती ने 'वैदिक राष्ट्रवाद : एक विमर्श' विषय पर कहा कि भारत की स्वतंत्रता और राष्ट्रचेतना के निर्माण में आर्य समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महर्षि दयानन्द ने सामाजिक सुधार के साथ राष्ट्रप्रेम और स्वराज्य की भावना को भी प्रबल किया। उन्होंने विदेशी शासन को स्वराज्य का विकल्प न मानते हुए 'भारत भारतीयों के लिए' का सन्देश दिया। स्वामी जी ने कहा कि राजनीतिक स्वतंत्रता की सुदृढ़ नींव सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण पर टिकी होती है।

न्यास के संरक्षक स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती ने कहा कि नवलखा महल आज राष्ट्रीय ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना चुका है। इसका प्रथम श्रेय स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती को जाता है। उन्होंने कहा कि स्वामी जी के सान्निध्य और प्रेरणा से न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य एवं उनकी टीम ने नवलखा महल में अनेक महत्वपूर्ण प्रकल्प स्थापित कर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी है।

न्यास के उपाध्यक्ष एवं आबूरोड आर्य समाज के प्रधान श्री मोतीलाल आर्य ने कहा कि नवलखा महल में महर्षि दयानन्द की प्रेरणा ने मेवाड़-वागड़ में स्वतंत्रता चेतना को नई दिशा दी। गोविन्द गुरु जैसे जननायकों ने इसी प्रेरणाधारा को आगे बढ़ाया।

राजसमन्द विधायक श्रीमती दीप्ति माहेश्वरी ने कहा कि नवलखा महल और स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती से उनका जुड़ाव उनकी माता स्वर्गीय श्रीमती किरण माहेश्वरी के समय से रहा है। उन्होंने कहा कि स्वामी जी के रोम-रोम में राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रभक्ति थी। उनकी प्रेरणा से नवलखा महल को आज भव्य स्वरूप और विशिष्ट पहचान मिली है।

स्वामी जी का सपना साकार हो रहा है : अशोक आर्य

स्वागत उद्बोधन में श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने कहा कि पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती का सान्निध्य और मार्गदर्शन प्राप्त होना उनके जीवन का सौभाग्य है। उन्होंने बताया कि स्वामी जी का सपना नवलखा महल को अन्तर्राष्ट्रीय पहचान दिलाना था। न्यास उनकी प्रेरणा को आधार बनाकर निरन्तर कार्य कर रहा है और आज नवलखा महल को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलना उनके सपने के साकार होने का प्रमाण है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री नवनीत आर्य के पौरोहित्य में यज्ञ से हुआ। संचालन आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर के प्रधान श्री संजय शाण्डिल्य ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन न्यास के कोषाध्यक्ष श्री नारायण लाल मित्तल ने किया।

कार्यक्रम में न्यास के पदाधिकारी, सदस्य, आर्य समाज के कार्यकर्त्ता एवं समाजसेवी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। प्रमुख रूप से न्यास मंत्री श्री भवानीदास आर्य, संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया, उपाध्यक्ष श्री मोतीलाल आर्य, न्यासी डॉ. एस.के. माहेश्वरी, जनसम्पर्क सचिव श्री विनोद कुमार राठौड़, श्री रवीन्द्र राठौड़, श्रीमती उगन्ता यादव, श्रीमती सरला गुप्ता, श्री राजकुमार गुप्ता, श्री इन्द्रप्रकाश यादव, श्री चन्द्रशेखर शर्मा, श्री महेश मित्तल सहित अनेक कार्यकर्त्ता एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे। न्यास की युवा इकाई NMCC यूथ ने संयोजिका श्रीमती ऋचा पीयूष के नेतृत्व में सारे प्रबन्ध अति उत्तमता के साथ किए।

कार्यक्रम का समापन शान्तिपाठ के साथ हुआ। - भँवरलाल गर्ग, व्यवस्थापक

समाज सेवा की आड़ में धर्मांतरण और राष्ट्र-विरोधी गतिविधियों को रोकने के लिए नया FCRA कानून

भारत में विदेशी चंदे के दुरुपयोग को रोकने के लिए सरकार ने २०२० के बाद अब प्रस्तावित FCRA संशोधन बिल २०२६ के जरिए नियमों को और सख्त किया है। खुफिया एजेंसियों के अनुसार, विदेशी फण्ड का इस्तेमाल भारत के विकास, समाज और सुरक्षा के खिलाफ किया जा रहा था।

कतिपय उदाहरण

1. विकास में बाधा : 'ग्रीनपीस इण्डिया' जैसे NGOs ने विदेशी फण्ड से ऊर्जा परियोजनाओं (कोयला, परमाणु) का विरोध किया, जिससे उनके FCRA लाइसेन्स रद्द हुए।

चंदे की हेराफेरी (Sub-granting) : 'ऑक्सफैम इंडिया' पर विदेशी फण्ड को अवैध रूप से 'CPR' जैसी संस्थाओं को ट्रांसफर करने का आरोप लगा। अब फण्ड ट्रांसफर पर पूर्ण रोक है।

धर्मांतरण : 'इस्लामिक दावा सेन्टर' (उमर गौतम) और अन्य

संगठनों द्वारा समाज सेवा के नाम पर धर्मांतरण की पुष्टि हुई। २०१४-२४ के बीच ऐसे हजारों लाइसेंस रद्द किए गए।

विदेशी एजेण्डा (Astroturfing) : डोनर्स के इशारे पर जमीनी जरूरतों के बजाय विदेशी एजेंडे से प्रेरित 'कृत्रिम जन-आन्दोलन' खड़े किए गए। (**निवारण:** अब सभी NGOs के लिए दिल्ली के मुख्य SBI बैंक में खाता, पदाधिकारियों के आधिकारिक पहचान-पत्र और गतिविधियों का ब्योरा अनिवार्य कर दिया गया है।)

5. बेंगलुरु में ED की बड़ी कार्रवाई (TTI मामला):

हाल ही में (अप्रैल २०२६), ED ने 'द टिमोथी इनिशिएटिव' (TTI) के विदेशी नागरिक मीका मार्क को एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया। इस संस्था ने FCRA रडार से बचने के लिए २४ विदेशी डेबिट कार्ड्स के जरिए पूरे भारत में सिर्फ ६ महीनों में ९२.५५ करोड़ रुपये का अवैध लेन-देन किया। अतः वर्त्तमान में जो बिल लाया जा रहा है उसका लागू होना परम आवश्यक है।

भारत के इस बिल का अमेरिका में विरोध क्यों ?

अमेरिकी रिपब्लिकन सांसद राइली मूर ने नए बिल की आलोचना करते हुए इसे "ईसाइयों पर सीधा हमला" बताया है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार चर्चों को अपने नियंत्रण में लेगी और चेतावनी दी कि इससे भारत-अमेरिका सम्बन्धों पर असर पड़ सकता है।

विवाद का मुख्य कारण :

प्रस्तावित २०२६ बिल के तहत एक 'नामित प्राधिकरण' (Designated Authority) बनाने का प्रावधान है। यदि किसी NGO का FCRA रद्द होता है या रिन्यू नहीं होता है, तो उसकी सम्पत्ति का प्रबन्धन यह अथॉरिटी करेगी (हालाँकि, बिल स्पष्ट करता है कि पूजा स्थलों का धार्मिक स्वरूप बरकरार रखा जाएगा)।

वस्तुतः यहाँ चोर की दाढ़ी में तिनका वाली बात है। यह बिल सभी मतजन्य संस्थाओं पर समान रूप से लागू है फिर ईसाई मतावलम्बी इतने चिन्तित और आक्रोशित क्यों हैं क्योंकि चोर की दाढ़ी में तिनका है।

राजनीति– हमें लगता है कि इस विषय पर राजनीति ज्यादा हो रही है, जनता को जितना भ्रमित कर दें, उद्देश्य है। वरना आज विरोध कर रही कांग्रेस ही इस बिल को लायी थी तथा समय-समय पर उसमें आवश्यक संशोधन भी किये थे। संक्षेप में-

श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने भारत के आन्तरिक मामलों और राजनीति में "विदेशी ताकतों (Foreign Hand)" के हस्तक्षेप की कड़ी आलोचना की थी। मूल 'विदेशी अंशदान (विनियमन) अधिनियम' (FCRA) १९७६ में इन्दिरा गाँधी की सरकार द्वारा आपातकाल के दौरान लाया गया था। इसके तहत राजनीतिक दलों, चुनाव उम्मीदवारों, पत्रकारों, जजों और यहाँ तक कि कार्टूनिस्टों के भी विदेशी फण्ड लेने पर रोक लगा दी गई थी।

'कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र' के भारी विरोध के समय तत्कालीन प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह ने क्या कहा था यह पाठकों को जानना चाहिए।

"कुडनकुलम में परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम मुश्किलों में पड़ गया है क्योंकि कुछ गैर-सरकारी संगठन (NGOs), जो मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका (US) में स्थित हैं, हमारे देश की ऊर्जा आपूर्ति बढ़ाने की जरूरत को नहीं समझते हैं। - डॉ. मनमोहन सिंह

डॉ. सिंह ने स्पष्ट रूप से माना था कि विदेशी चन्दे से चलने वाले एनजीओ भारत के विकास कार्यों (विशेषकर ऊर्जा परियोजनाओं) में बाधा डाल रहे हैं।

मनमोहन सिंह की सरकार ने ही २०१० में पुराने एफसीआरए कानून में संशोधन करके इसे बहुत सख्त बना दिया था। यूपीए सरकार ने ही यह नियम लागू किया था कि एफसीआरए लाइसेन्स अब स्थायी (Permanent) नहीं होगा, बल्कि हर ५ साल में इसका रिन्यूअल (Renewal) कराना अनिवार्य होगा। इसी संशोधन के परिणामस्वरूप मनमोहन सिंह के कार्यकाल में भी हजारों एनजीओ के लाइसेंस रद्द किए गए थे।

स्थितियों और दुरुपयोग के पैमानों को देखते हुए नए नियमों का लागू होना आवश्यक है। भारत एक सम्प्रभु राष्ट्र है और इसकी नीतियाँ व आन्तरिक सुरक्षा अमेरिका या किसी अन्य देश के दबाव की मोहताज नहीं हैं।

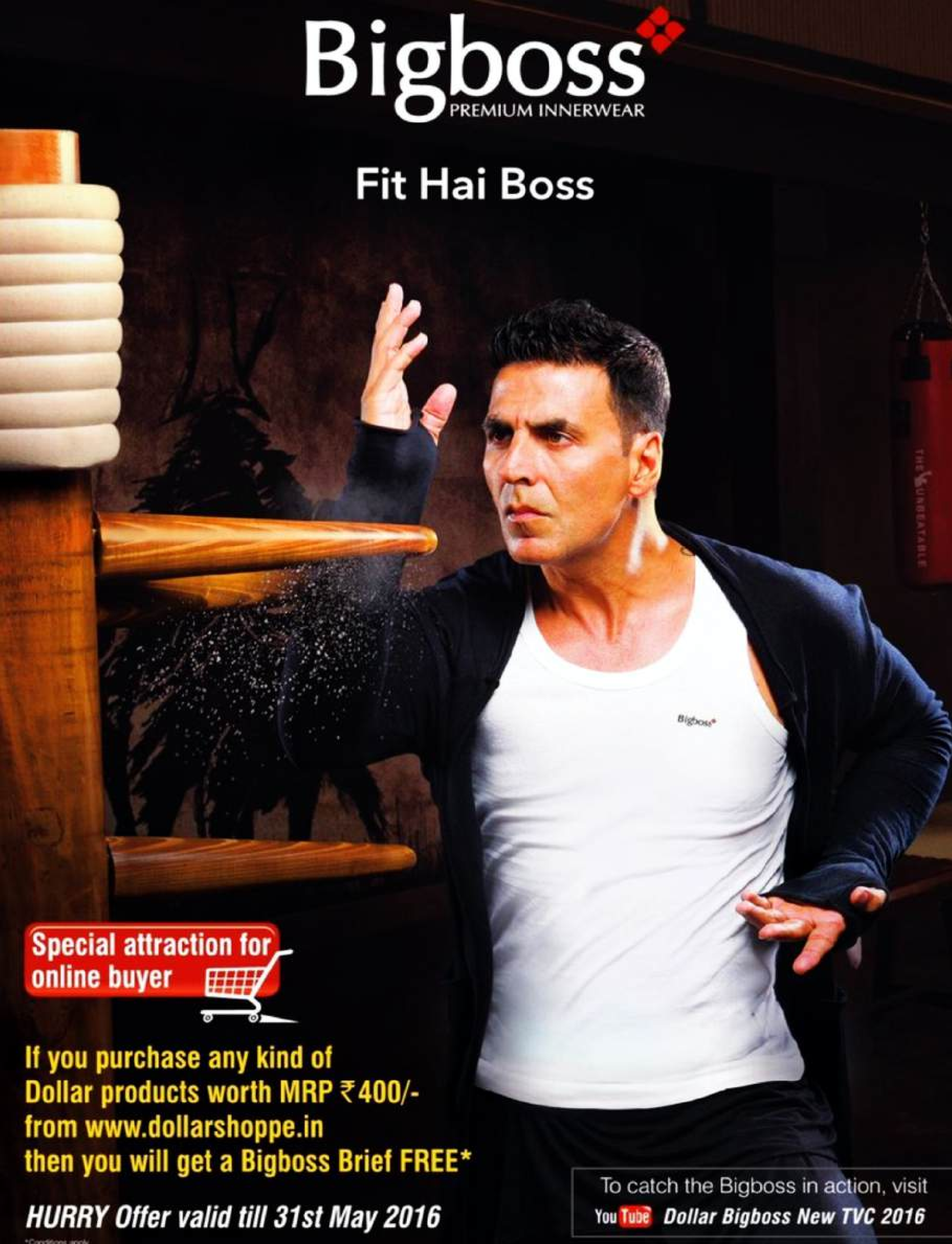
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
Special attraction for online buyer
If you purchase any kind of
Dollar products worth MRP ₹400/-
from www.dollarshoppe.in
then you will get a Bigboss Brief FREE*
HURRY Offer valid till 31st May 2016
*Conditions apply
To catch the Bigboss in action, visit
YouTube Dollar Bigboss New TVC 2016

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 September-2026 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2025-2027

“साध्नोति पराणि धर्म कार्याणि स साधुः” जो धर्मयुक्त उत्तम काम करे, सदा परोपकार में प्रवृत्त हो, कोई दुर्गुण जिसमें न हो, विद्वान्, सत्योपदेश से सबका उपकार करे, उसको साधु कहते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास पृष्ठ ३५३

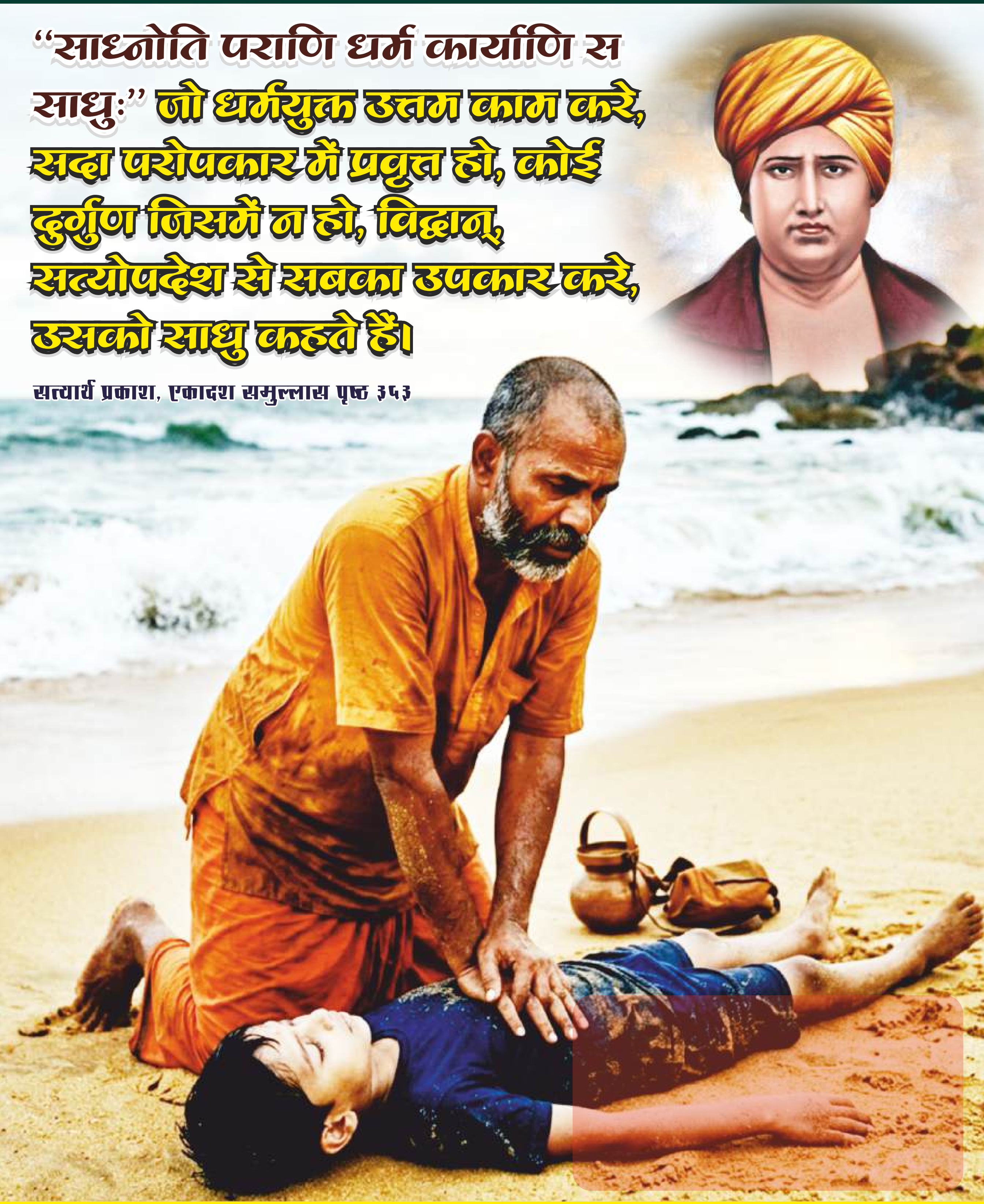

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर